कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qksu (dk-) : +91(11) 23381428
QSDI : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई-मेल
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय-सूची

संगठनात्मक गतिविधियां

सरदार पटेल जयंती पर 'एकता दौड़' का आयोजन.............................. 7
स्थानीय निकाय चुनाव.. 9

सरकार की उपलब्धियां

तीन स्वर्ण संबंधी योजनाओं का शुभारंभ.. 10
'व्यापार में सहूलियत' रैंकिंग में भारत ने लगाई 12 स्थान की छलांग........ 11
प्रधानमंत्री ने सोनीपत में तीन राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला रखी.. 12

वैचारिकी

स्वतंत्रता स्वयं साध्य नहीं केवल साधन है
पं. दीनदयाल उपाध्याय.. 13

श्रद्धांजलि

प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक के. आर. मलकानी.. 15

लेख

द ईज ऑफ डूइंग बिजनेस
– **अरुण जेटली**.. 21
मोदी विरोधी कर रहे हैं भारत को बदनाम
– **एम. वेंकय्या नायडु** 23
पं. दीनदयाल के सपनों एवं जनसंघ की ऋचाओं को साकार करते शिवराज.
– **प्रभात झा**... 26

अन्य

तीसरा भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन... 16
श्रीनगर रैली.. 28

कमल संदेश के सभी सुधी पाठकों को **छठ महापर्व** की हार्दिक शुभकामनाएं!

सोशल मीडिया से...

फेसबुक

श्री नरेंद्र मोदी

भारत कश्मीरियत के बिना अधूरा है। जम्मू-कश्मीर के लिए पैकेज राज्य के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देंगे और युवाओं की आकांक्षाओं को पंख। हमारी सरकार, 'सबका साथ, सबका विकास' के ध्येय से प्रेरित होकर भारत के हर हिस्से में हर व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंचे, यह सुनिश्चित कर रही है।

.....

श्री अमित शाह

श्री नीतीश कुमार और श्री लालू प्रसाद यादव को बिहार विधानसभा चुनाव जीतने पर बधाई देता हूं। हम बिहार की जनता के जनादेश का सम्मान करते हैं। नई सरकार को मेरी शुभकामनाएं कि वह बिहार को विकास के पथ पर आगे ले जाए।

.....

श्री अरुण जेटली

विश्व बैंक ने ईज ऑफ डूइंग बिजनेस की रैंकिंग में भारत का स्थान 12 अंक ऊपर कर दिया है। पिछले महीने विश्व आर्थिक फोरम ने भी भारत को अपग्रेड किया था। हालांकि रैंक में सुधार मध्यम है लेकिन यह विपरीत रुझान को मोड़ने की शुरुआत है। सरकार ने पिछले 17 महीने में जो कदम उठाए हैं उन्हें देखते हुए भारत का स्थान खासा ऊंचा होना चाहिए था। मैं समझता हूं कि इन सभी कदमों को संज्ञान में नहीं लिया गया है क्योंकि विश्व बैंक का मानदंड एक निर्धारित तिथि पर आधारित है। साथ ही वह घोषणाओं का असर होने तक प्रतीक्षा भी करती है। फिर भी भारत की स्थिति में जो सुधार हुआ है उसमें त्वरित निर्णय प्रक्रिया, तीव्र नीतिगत बदलाव, शीर्ष स्तर पर भ्रष्टाचार खत्म होने और मंजूरी प्रक्रिया सरल होने की अहम भूमिका है।

.....

twitter

श्री नरेंद्र मोदी *@narendramodi*

पैसा हो तो निकल आता है रास्ता, लेकिन रास्ता हो तो आने लगता है पैसा।

.....

श्री अमित शाह *@AmitShahOffice*

निकाय चुनावों में प्रभावशाली प्रदर्शन के लिए कार्यकर्ताओं और भाजपा केरल इकाई को बधाई! पार्टी के प्रति विश्वास व्यक्त करने के लिए केरल के लोगों को धन्यवाद!

.....

श्री जेपी नड्डा *@JPNadda*

एड्स के खिलाफ लड़ाई का समर्थन करने को लेकर भारत अफ्रीका को सुलभ, सस्ती, उच्च गुणवत्ता जेनेरिक दवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

.....

पाथेय

गौरवशाली भारत का निर्माण

हमें अपने राष्ट्र के विराट को जाग्रत करने का काम करना है। अपने प्राचीन के प्रति गौरव का भाव लेकर, वर्तमान या यथार्थवादी आकलन कर और भविष्य की महत्वाकांक्षा लेकर हम इस कार्य में जुट जाएं। हम भारत को न तो किसी पुराने जमाने की प्रतिच्छाया बनाना चाहते हैं और न रूस या अमरीका की तस्वीर।

विश्व का ज्ञान और आज तक की अपनी संपूर्ण परंपरा के आधार पर हम एक ऐसा भारत निर्माण करेंगे जो हमारे पूर्वजों के भारत से अधिक गौरवशाली होगा। जिसमें जन्मा मानव अपने व्यक्तित्व का विकास करता हुआ संपूर्ण मानव ही नहीं, अपितु सृष्टि के साथ एकात्मकता का साक्षात्कार कर 'नर से नारायण' बनने में समर्थ हो सकेगा। यह हमारी संस्कृति का शाश्वत, दैवी और प्रवाहमान रूप है। चौराहे पर खड़े विश्व-मानव के लिए यही हमारा दिग्दर्शन है। भगवान हमें शक्ति दे कि हम इस कार्य में सफल हों, यही प्रार्थना है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

सम्मान वापसी : विरोध के लिए विरोध

प्रगति की दौड़ से गुजर रहे भारत की प्रशंसा ना करे ना सही लेकिन ऐसा तो ना करे जिससे भारत की प्रगति पर प्रश्न चिह्न लगे। भारत सबका है। हम सब भारतीय हैं। प्रगति सरकार की नहीं, प्रगति भारत की होती है। क्या गत 18 महीने में भारत की खोई हुई साख नहीं लौटी है। सामान्य से सामान्य व्यक्ति का उत्तर होगा- साख लौटी ही नहीं, बल्कि साख बढ़ी है। सम्मान जीवन का मान और मर्यादा होती है। वो कृतित्व पर दिया जाता है। अपने कृतित्व को लौटाना, यह कहां की समझ है? पुरस्कार व्यक्ति को मिलता है, परन्तु उसके पीछे हजारों-हजार लोगों की दुआएं होती हैं। अपनी कृति का अपमान करना, यह कहां की संस्कृति है?

विरोध सदैव से हुआ है, सभी का हुआ है, आगे भी होता रहेगा, लेकिन विरोध इसलिए कि देश ने नरेन्द्र मोदी और भाजपा को जनादेश दिया, यह लोगों की समझ से परे है, विचारों का विरोध विचार से होना चाहिए। साहित्य समाज का होता है, पार्टी का नहीं। कला समाज के लिए होती है, पार्टी के लिए नहीं। विचाररूपी विरोध प्रकट करने के अनेक तरीके हो सकते हैं। लेकिन अभी का जो तरीका अपनाया गया है, उसे जीवंत समाज फूहड़ मान रहा है। 125 करोड़ आबादी वाले देश में घटनाएं कब नहीं घटीं। क्या आगे घटनाएं नहीं घटेंगी? घटनाएं न घटे इसकी कोशिश सदैव जारी रहनी चाहिए। यहां वो उल्टा हो रहा है।

आजादी के बाद ऐसे कितने प्रसंग आए, जब देश का दिल दुखा। देश दर्द से भर गया, पर ऐसे समय में किसी साहित्यकार की आत्मा नहीं जगी। विरोध मंचन कर किया जा सकता है, विरोध आलेख लिखकर किया जा सकता है। विरोध फिल्म बनाकर किया जा सकता है। विरोध संवाद के माध्यम से हो सकता है। लेकिन वर्तमान में जो विरोध का तरीका अपनाया गया है, उसकी कलई स्वयं उतर गई।

विरोध के लिए विरोध। हमारा प्रधानमंत्री नहीं बना, इसके लिए विरोध। हमारे विचारों को लोकतंत्र में जगह नहीं मिली, इसलिए विरोध। जिस विरोध को समाज न स्वीकारे उस विरोध का स्वयं मजाक उड़ जाता है। पश्चिम बंगाल में नंदीग्राम की घटना घटी। तत्कालीन सत्ताधारी वामपंथियों के खिलाफ विचारकों ने कलम उठा लिया। लेख लिखना शुरू किया। विरोध प्रकट करने के अनेक तरीके अपनाए। इसको कहा जाता है विरोध। कहां गए थे ये साहित्यकार, फिल्मकार-नाटककार, जो इस समय विधवा विलाप कर रहे हैं। आजादी के बाद से लेकर 2013 तक देश में घटित एक नहीं अनेक संगीन घोटालों, जिनके कारण भारत की बदनामी हुई, क्यों नहीं दिया इस्तीफा और क्यों नहीं लौटाए गए पुरस्कार? संविधान की हत्या, कलम पर पाबंदी, जबरन नसबंदी, तानाशाही का नमूना आपातकाल में देखा गया। किसी साहित्यकार ने ऐसे भीषण क्षण में पुरस्कार नहीं लौटाए। कहां चली गई थी खुद्दारी? कहां चला गया था पुरस्कार का गुमान?

पुरस्कार व्यक्ति को विनम्र बनाता है। पुरस्कार दिया ही इसलिए जाता है कि वह विनम्रता का पूजक होता है, लेकिन पुरस्कार की गुमान में डूबे लोग जन-गण-मन की अवमानना करने में लगे हैं। सम्मान का अपमान समाज का अपमान। भारत के जन का अपमान। नक्सली समस्या हो, माओवादी समस्या हो, जम्मू-कश्मीर की समस्या हो, पाक-अधिकृत कश्मीर की समस्या हो, बीहड़ों के चंबलों की समस्या हो, समस्या चाहे सांप्रदायिकता की हो, क्या इन क्षेत्रों में पूर्व में घटनाएं नहीं घटीं? हमारी जानकारी के अनुसार एक नहीं अनेक घटनाएं घटीं। कश्मीर से विस्थापित लोग रोते पाए जाते हैं। नक्सलियों की मार से आज भी 200 से अधिक जिले कराहते पाए जाते हैं। माओवादियों के आतंक

से आज भी धरती कांप उठती है। पाक अधिकृत कश्मीर आए दिन तिरंगा जलाता है। हम पूछना चाहते हैं उन कला के साधकों से, इन बातों के खिलाफ उनकी कला जागृत क्यों नहीं होती?

कुछ साहित्यकारों के, जो तथाकथित हैं, जिनके अतीत को देश का इतिहास जानता है, से देश डरनेवाला नहीं। भारत का लोकतंत्र बहुत मजबूत है। भारत प्यारा देश है। यहां प्यार की पूजा होती है। यहां डरा-धमका और चमकाकर समाज की सेवा नहीं होती। वर्तमान में पुरस्कार लौटाने का जो कृत्य कुछ लोगों द्वारा किया जा रहा है, वह सच्चे अर्थों में देश के लाखों कलासाधकों का उपहास करना है। ■

वन रैंक वन पेंशन लागू किया गया, केंद्र सरकार ने अधिसूचना जारी की

भाजपानीत राजग सरकार ने देश के सैनिकों का सम्मान किया। कांग्रेस ने ओआरओपी के मुद्दे पर पूर्व सैनिकों को दशकों तक धोखा दिया। मोदी सरकार ने वन रैंक वन पेंशन योजना को लागू करके उन्हें सम्मानित किया। दिवाली से पहले सैनिकों को सरकार ने एक बड़ा तोहफा दिया। केंद्र सरकार ने वन रैंक वन पेंशन लागू कर दिया। इस संबंध में सरकार ने 7 नवंबर को अधिसूचना जारी कर दी। अधिसूचना के मुताबिक साल 2013 में अवकाश प्राप्त करने वाले पूर्व सैनिकों का पेंशन दुबारा तय किया जाएगा। पूर्व सैनिकों को बढ़े हुए पेंशन का लाभ जुलाई 2014 से मिलेगा।

भविष्य में पेंशन को हर पांच साल बाद संशोधन किया जाएगा। जो सैनिक स्वेच्छा से वीआरएस लेते हैं या रिटायर होते हैं उन्हें इसका लाभ नहीं मिलेगा। वन रैंक वन पेंशन की मांग को लेकर पूर्व सैनिक पिछले 146 दिनों से दिल्ली के जंतर-मंतर में धरने पर बैठे थे। इतना ही नहीं वन रैंक वन पेंशन का मुद्दा लोकसभा चुनाव में भी अहम था। ■

प्रधानमंत्री एवं भाजपाध्यक्ष ने दी लालकृष्ण आडवाणी को जन्मदिन की शुभकामनाएं

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 8 नवंबर को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के नई दिल्ली स्थित निवास पर जाकर उनको जन्मदिन की बधाई दी। इसके साथ ही, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने भी ट्वीट कर श्री आडवाणी को जन्मदिन की बधाई दी।

श्री मोदी ने ट्वीट किया, 'हमारे मार्गदर्शक और प्रेरक, सम्मानीय श्री लालकृष्ण आडवाणी जी को जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएं। मैं आडवाणी जी के दीर्घायु जीवन और बेहतर स्वास्थ्य की कामना करता हूं।' पूर्व उप प्रधानमंत्री की सराहना करते हुए श्री मोदी ने ट्वीट किया, 'देश के लिए आडवाणी जी का योगदान अमूल्य है। वह हमेशा से अपूर्व ज्ञानवान एवं निष्ठावान व्यक्ति के तौर पर सम्मानित किए जाते रहे हैं।' प्रधानमंत्री ने एक अन्य ट्वीट में कहा, 'निजी तौर पर मैंने आडवाणी जी से बहुत कुछ सीखा है। हमारे जैसे कार्यकर्ताओं के लिए वह बेहतरीन शिक्षक और निस्वार्थ सेवा के प्रतिमान रहे हैं।'

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने ट्वीट किया है कि हम सब कार्यकर्ताओं के प्रेरणास्रोत आदरणीय आडवाणी जी को जन्मदिन की शुभकामनाएं, ईश्वर से उनके परम स्वास्थ एवं दीर्घायु की प्रार्थना करता हूं। गौरतलब है कि भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी का जन्म 8 नवंबर 1927 को पाकिस्तान के कराची में हुआ था।■

सरदार पटेल जयंती पर 'एकता दौड़' का आयोजन

सरदार पटेल ने हमें 'एक भारत दिया' हम सब मिलकर इसे 'श्रेष्ठ भारत' बनायें : प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 31 अक्टूबर को सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। नई दिल्ली के राजपथ पर एकत्रित उत्साही युवाओं और छात्रों को संबोधित करते हुये उन्होंने कहा कि देश की एकता सरदार पटेल द्वारा एकसूत्र में पिरोई गई थी। उन्होंने कहा कि यह सरदार पटेल की निर्णय लेने में दृढ़ता और बुद्धिमत्ता थी, जिससे सभी प्रकार की बुराइयां विफल हुई और आधुनिक, स्वतंत्र भारत का उद्भव हुआ।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सरदार पटेल ने हमें 'एक भारत' दिया था और अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम इसे 'श्रेष्ठ भारत' बनायें। उन्होंने कहा कि एकता, शांति और सौहार्द के सिद्धांत पर चलकर 125 करोड़ भारतीय आगे बढ़ सकते हैं।

प्रधानमंत्री ने 1920 के दशक में अहमदाबाद के मेयर के रूप में साफ-सफाई अभियान और महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण के प्रस्ताव सहित सरदार पटेल द्वारा उठाए गये कदमों का स्मरण किया। श्री नरेन्द्र मोदी ने नई योजना 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की रूपरेखा रखी, जिस पर राज्यों के साथ विचार-विमर्श कर केन्द्र सरकार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत दो राज्य एक वर्ष की अवधि के लिए अनोखी साझेदारी करेंगे। इस अवधि के दौरान दोनों राज्यों के बीच सांस्कृतिक और छात्रों का आदान-प्रदान किया जाएगा, जिससे इन राज्यों के लोगों को एक दूसरे को समझने और करीब आने का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक वर्ष अलग-अलग राज्य एक-दूसरे के साझेदार हो सकते है।

प्रधानमंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रधानमंत्री ने एकत्रित लोगों को शपथ दिलाई और 'एकता दौड़' को झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर दिल्ली के उपराज्यपाल श्री नजीब जंग, दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल और केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह तथा शहरी विकास मंत्री श्री वेंकैया नायडू भी उपस्थित थे। ■

संगठनात्मक गतिविधियां

राज्यों में भी हुआ राष्ट्रीय एकता दौड़ का आयोजन

लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर पर 31 अक्टूबर को देशभर में राष्ट्रीय एकता दौड़ का आयोजन किया गया। इस दौड़ को लेकर बच्चों, युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक में काफी उत्साह देखने को मिला। कुछ राज्यों के समाचार हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं :

बिहार

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 140 वीं जयंती के मौके पर कटिहार में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। श्री शाह ने कहा कि सरदार पटेल के धैर्यवान और दूरदर्शी नेतृत्व के कारण ही 500 से ज्यादा छोटी-बड़ी रियासतों में बंटे भारत को एकजुट किया जा सका था। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री अनंत कुमार, कटिहार के सांसद श्री तारिक अनवर, पूर्व सांसद श्री निखिल कुमार चौधरी, विधानपार्षद श्री अशोक अग्रवाल एवं श्री सत्येंद्र कुशवाहा सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश में सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। राजधानी भोपाल समेत प्रदेशभर में रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया गया। राज्य शासन की ओर से राजधानी भोपाल में आयोजित इस कार्यक्रम में भोपाल से हजारों लोगों ने शामिल होकर दौड़ लगाई। यह दौड़ प्रात: 9 बजे राजधानी के तात्या टोपे नगर स्टेडियम से शुरू हुई, जो वल्लभ भवन के सामने वल्लभ उद्यान में समाप्त हुई। हजारों की संख्या में युवा, बच्चे, बुजुर्ग शामिल हुए। दौड़ समाप्ति के बाद वल्लभ भवन उद्यान में प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान सुबह 9.30 बजे शासकीय सेवकों एवं नागरिकों को एकता की शपथ दिलाई।

राजस्थान

सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया गया। राजधानी जयपुर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सहित अन्य मंत्री एवं अधिकारी भी दौड़ में शामिल हुए। सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर जयपुर के शहीद स्मारक से शुरू हुई 'रन फॉर यूनिटी' में सैकड़ों स्कूली बच्चों एवं अन्य लोगों ने दौड़कर एकता का संदेश दिया। दौड़ को मुख्यमंत्री श्रीमती राजे ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इससे पहले श्रीमती राजे ने सभी को राष्ट्रीय एकता और अखंडता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री कर्नल श्री राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़ के साथ मंत्री श्री राजपाल सिंह शेखावत, श्री अरुण चतुर्वेदी और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री अशोक परनामी और जयपुर सांसद श्री रामचरण बोहरा भी उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती पर हजरतगंज, लखनऊ स्थित सरदार पटेल प्रतिमा पर राज्यपाल श्री राम नाईक, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री जेपी नड्डा एवं मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने माल्यार्पण कर नमन किया। राज्यपाल नाईक ने सरदार शहीद स्मारक तक आयोजित दौड़ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौड़ में बुजुर्गो, जवानों और बच्चों ने हिस्सा लिया।

छत्तीसगढ़

लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती और राष्ट्रीय एकता दिवस के मौके पर रायपुर में एकता दौड़ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने भी अपने मंत्रियों और विधायकों के साथ दौड़ लगाई।

तेलीबांधा तालाब से मुख्यमंत्री अपने आवास सीएम हाउस तक दौड़ते हुए गए। एकता दिवस में लोक निर्माण मंत्री राजेश मूणत, वन मंत्री महेश गागड़ा, खेल मंत्री भईया लाल राजवाड़े, पाठ्य पुस्तक निगम अध्यक्ष देवजी भाई पटेल, आरडीए अध्यक्ष संजय श्रीवास्तव, विधायक श्रीचंद सुंदरानी, नवीन मार्कण्डेय, संगठन मंत्री राम प्रताप सिह, मुख्य सचिव विवेक ढाँढ सहित बड़ी संख्या में भाजपा के नेता और अधिकारी-कर्मचारियों के साथ स्कूली छात्र उपस्थित रहे। ■

स्थानीय निकाय चुनाव

केरल में खिला कमल

केरल स्थानीय चुनाव में भाजपा ने शानदार प्रदर्शन किया। सत्तारूढ़ कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ को 7 नवंबर को करारा झटका लगा। इसे अगले साल राज्य में होने वाले विधानसभा चुनाव का सेमीफाइनल माना जा रहा था।

सीपीआई (एम) के नेतृत्व में एलडीएफ को स्थानीय निकाय चुनाव में जीत मिली है। 2 और 5 नवंबर को हुए चुनाव में एलडीएफ ने 6 में से 4 नगरनिगमों में जीत हासिल की, 85 में से 46 नगरपालिकाओं और ग्राम पंचायत की 941 में से 545 सीटों पर एलडीएफ ने जीत दर्ज की है। यूडीएफ को सिर्फ 2 नगर निगम, 40 नगरपालिकों और 366 ग्राम पंचायतों में जीत मिली। भारतीय जनता पार्टी को एक नगरपालिका और 14 ग्राम पंचायत की सीटों पर जीत मिली पर, भाजपा ने तिरुवनंतपुरम, एर्नाकुलम और पलक्कड में यूडीएफ और एलडीएफ उम्मीदवारों को कड़ी टक्कर दी। 100 सदस्यीय तिरुवनंतपुरम नगर निगम में भाजपा को 35 सीटें मिली। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री मुरलीधरन ने कहा, 'छोटे स्तर पर ही सही, मगर भाजपा का ऐसा प्रदर्शन अद्‌भुत घटना है।'

केडीएमसी चुनाव में शिवसेना–भाजपा ने बाजी मारी

महाराष्ट्र के कल्याण-डोंबिवली महानगर पालिका चुनाव में जहां शिवसेना सबसे आगे रही, वहीं भाजपा पिछले चुनाव के मुकाबले पांच गुना अधिक सीटों पर विजय प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रही। इस सफलता के बाद पूरे राज्य में खुशी की लहर है। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना मात्र 9 तो वहीं कांग्रेस 4 और राकांपा 2 सीटों पर ही सिमट गए। शिवसेना, भाजपा और बसपा के एक-एक प्रत्याशी को निर्विरोध चुना गया। गत दो नवम्बर को आए कल्याण-डोंबिवली महानगरपालिका चुनाव के नतीजे शिवसेना और भाजपा के लिए सकारात्मक संकेत लेकर आए। 122 सीटों में से 120 सीटों पर हुए चुनाव के नतीजों में शिवसेना को 52 सीटें मिली, जबकि 2010 में 38 सीटों पर जीत मिली थी। भाजपा को 42 सीटों पर विजय मिली है, जबकि पिछली बार भाजपा को मात्र 9 सीटें मिली थीं। मनसे को मात्र 9 सीटें मिली हैं, जबकि पिछली बार 27 सीटें मिली थीं। कांग्रेस को 4 और राकांपा को मात्र 2 ही सीटें मिली हैं। इसके अलावा असदुद्दीन ओवैसी की एआईएमआईएम और बसपा को 1-1 सीट पर सफलता मिली है, जबकि 9 सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवार जीते हैं।

गोवा नगर निगम चुनाव : 6 शहरों में भाजपा का दबदबा

गोवा में हुए हालिया स्थानीय निकायों के चुनावों में भाजपा का दबदबा रहा। 6 म्यूनिसिपल कौंसिलों में भाजपा समर्थित उम्मीदवारों का बहुमत रहा, जबकि कांग्रेस समर्थित उम्मीदवार सिर्फ 4 म्यूनिसिपल कौंसिल में बहुमत हासिल कर सके। 27 अक्टूबर 2015 को 11 म्यूनिसिपल कौंसिल के चुनाव परिणाम घोषित किए गए। गौरतलब है कि ये स्थानीय चुनाव दलगत आधार पर नहीं लड़े गए थे, लेकिन भाजपा ने आधिकारिक तौर पर कई उम्मीदवारों को समर्थन दिया था।

गोवा के मुख्यमंत्री श्री लक्ष्मीकांत पार्सेकर ने कहा कि लोगों का हमें समर्थन प्राप्त है और यह चुनाव परिणाम भाजपा सरकार द्वारा किए गए कार्यों की पुष्टि करता है। भाजपा समर्थित उम्मीदवार मापुसा, मार्मगो (वास्को-डी-गामा), सैगुएम, पर्नेम, चर्चोरेम, बिचोलिम में बहुमत प्राप्त किए तथा कैनकोना में पांच सीटें जीतकर अच्छा प्रदर्शन किया। ■

तीन स्वर्ण संबंधी योजनाओं का शुभारंभ

अशोक चक्र वाले भारतीय स्वर्ण सिक्के की शुरुआत एक राष्ट्रीय गौरव

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 5 नवंबर को दिल्ली स्थित सात, रेसकोर्स रोड में हुए एक समारोह में तीन स्वर्ण संबंधी योजनाओं की शुरुआत की। ये योजनाएं हैं: स्वर्ण मौद्रीकरण योजना, सार्वभौम स्वर्ण बांड योजना और भारतीय स्वर्ण सिक्का। इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने इन योजनाओं को 'सोने पे सुहागा' का उदाहरण बताया। प्रधानमंत्री ने कहा कि कोई कारण नहीं है कि भारत को गरीब देश कहा जाए, उसके पास 20,000 टन स्वर्ण है। उन्होंने कहा कि भारत में उपलब्ध सोने को उत्पादक उपयोग के लिए रखा जाना चाहिए और ये योजनाएं हमें इस लक्ष्य को प्राप्त करने का रास्ता दिखाती हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारतीय समाज में अक्सर स्वर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण का एक स्रोत रहा है, और ये योजनाएं सशक्तिकरण की भावना को रेखांकित करेंगी।

प्रधानमंत्री ने भारत में सुनार परिवारों को हासिल विश्वास के विशाल बंधन की बात कही। उन्होंने कहा कि भारतीय सुनारों के इन योजनाओं से परिचित हो जाने के बाद वे इनके सबसे बड़े एजेंट बन सकते हैं। श्री नरेन्द्र मोदी ने अशोक चक्र वाले भारतीय स्वर्ण सिक्के की शुरुआत को राष्ट्रीय गौरव का विषय बताया।

प्रधानमंत्री ने इन योजनाओं पर एक वेबसाइट http://finmin-nic-in/swarnabharat भी शुरू की और छह प्रारंभिक निवेशकों को निवेश के

शेष पृष्ठ 11 पर

क्या है स्वर्ण मौद्रीकरण योजना

- स्वर्ण मौद्रीकरण योजना का उद्देश्य असल में देश भर में लोगों और संस्थानों के पास बेकार पड़े अनुमानित 20,000 टन सोने का एक हिस्सा इस्तेमाल में लाना है। कैबिनेट इस योजना पर ठप्पा लगा चुकी है।
- स्वर्ण मौद्रीकरण योजना के तहत आप अपना स्वर्ण बैंक में जमा कर सकते हैं। जिस भी बैंक में आप यह जमा करेंगे, बैंक उस पर आपको एक निश्चित दर पर ब्याज देगा। अब तक होता यह था कि स्वर्ण को बैंक में रखने के लिए आपको लॉकर लेना पड़ता था और इस पर खुद आपको ही बैंक को पैसा चुकाना पड़ता था। यह एक प्रकार से वैसे ही होगा जैसे बैंक में आप पैसा रखते हैं और बदले में बैंक आपको ब्याज देता है। स्वर्ण का मौद्रीकरण असल में स्वर्ण के बदले मिलने वाला पैसा ही है।
- आरबीआई के मुताबिक, योजना के तहत इसमें कम से कम 30 ग्राम 995 शुद्धता वाला स्वर्ण बैंक में रखना होगा। वह स्वर्ण-बार, सिक्का, गहने आदि इसमें मान्य होगा। अधिकतम की कोई सीमा नहीं।
- आरबीआई के तहत नामित सभी व्यावसायिक बैंकों को इस योजना को शुरू करने की अनुमति है। आरबीआई के मुताबिक, बैंकों को गोल्ड डिपॉजिट पर खुद ब्याज दरें तय करने की अनुमति दी गई है।
- परिपक्वता (मैच्योरिटी) पर लोगों के पास यह विकल्प होगा कि वे या तो पैसे लें या फिर अपना स्वर्ण वापस ले सकेंगे। यह भुगतान उस समय सोने की कीमत के अनुरूप होगी। जब आप जमा करने जाएंगे तभी आपको यह बताना होगा कि आप कौन सा विकल्प चुनने जा रहे हैं। इसे बाद में बदला नहीं जा सकेगा।
- इस योजना के तहत, तीन तरह के डिपॉजिट किए जाएंगे- पहला, शार्ट टर्म (1 से 3 साल), मीडियम टर्म (5 से 7 साल) और लांग टर्म (12 से 15 साल) तक के लिए।
- सरकार द्वारा नोटिफाई किए गए प्योरिटी टेस्टिंग सेंटर्स से आपके स्वर्ण की पहले पूरी तरह से शुद्धता की जांच होगी। इसके बाद ही जमा संबंधी आगे कामकाज किया जा सकेगा।
- परिपक्वता अवधि से पूर्व निकासी का प्रावधान तो होगा लेकिन इसमें न्यूनतम लॉक-इन की अवधि भी होगी। इससे पहले निकालने पर जुर्माने का प्रावधान भी होगा। अब कौन सा बैंक कितना जुर्माना लेगा, यह फैसला बैंक स्वयं तय करेंगे।
- इस योजना में, दो या दो से अधिक के संयुक्त जमाधारकों की अनुमति है।
- बाजार नियामक 'सेबी' के तहत रजिस्चर्ड म्यूचुअल फंड्स/एक्सचेंज ट्रेडेड फंड्स और भारतीय निवासियों के लिए ही है यह योजना।

सरकार की उपलब्धियां

'व्यापार में सहूलियत' रैंकिंग में भारत ने लगाई 12 स्थान की छलांग

भारत जैसे विशाल आकार वाली अर्थव्यवस्था के व्यापार में सहूलियत के मामले में 12 स्थानों की छलांग लगाना उल्लेखनीय उपलब्धि है। विश्व बैंक की इस रैंकिंग में भारत अब विश्व में 142वें स्थान से 130 वें स्थान पर आ गया है।

भाजपानीत राजग सरकार की बेहतर नीतियों की वजह से व्यापार करने के लिए आसान जगहों में (ईज ऑफ डूइंग बिजनेस) भारत की रैंकिंग बेहतर हुई है। 27 अक्टूबर को विश्व बैंक द्वारा जारी इस सूची में भारत का स्थान 12 अंक ऊपर कर दिया है। रैंकिंग में हुए इस सुधार के बाद भारत अब विश्व में 142 वें स्थान से 130 वें स्थान पर आ गया है। पिछले महीने विश्व आर्थिक मंच ने भी भारत को अपग्रेड किया था।

विश्व बैंक ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट 'डूइंग बिजनेस 2016' को जारी किया है। रिपोर्ट के मुताबिक इस श्रेणी में सिंगापुर शीर्ष स्थान पर है। उसके बाद न्यूजीलैंड, डेनमार्क, दक्षिण कोरिया, हांगकांग, ब्रिटेन और अमेरिका का स्थान आता है। इसी तरह से चीन को 84 वां और पाकिस्तान को 138वां स्थान मिला है। पाकिस्तान पिछले साल 128 वें स्थान पर था। वहीं, चीन ने छह स्थानों का सुधार किया है, पिछली रिपोर्ट में वह 90 वें स्थान पर था।

'व्यापार में सहूलियत' की रैंकिंग में भारत के 12 पायदान ऊपर आने को अच्छा संकेत माना जा रहा है। विश्व बैंक की ये ताजा रिपोर्ट मोदी सरकार की बेहतर नीतियों का उदाहरण है। केंद्रीय वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली ने विश्व बैंक की रिपोर्ट में भारत की रैंकिंग में हुए सुधार पर कहा है कि अगले वर्ष की रिपोर्ट में इस रैंकिंग के और बेहतर होने की उम्मीद है। श्री जेटली ने कहा कि विश्व व्यापार संगठन के मंच पर भी भारत की रैंकिंग में सुधार आया है।

वित्तमंत्री श्री जेटली ने अपने फेसबुक पृष्ठ पर लिखा, 'हालांकि रैंक में सुधार मध्यम है, लेकिन यह विपरीत रूझान को मोड़ने की शुरूआत है। सरकार ने पिछले 17 महीने में जो कदम उठाए हैं, उन्हें देखते हुए भारत का स्थान खासा ऊंचा होना चाहिए था। इन सभी कदमों को संज्ञान में नहीं लिया गया है, क्योंकि विश्व बैंक का मानदंड एक निर्धारित तिथि पर आधारित है। फिर भी, भारत की स्थिति में जो सुधार हुआ है, उसमें त्वरित निर्णय प्रक्रिया, तीव्र नीतिगत बदलाव, शीर्ष स्तर पर भ्रष्टाचार खत्म होने और मंजूरी प्रक्रिया सरल होने की अहम भूमिका है। निवेशकों को अब नीतियों में बदलाव या मंजूरियों के लिए दिल्ली आकर मंत्रालयों के आगे लाइन लगाने की जरूरत नहीं पड़ती।'

विश्व बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री और वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कौशिक बसु ने कहा कि किसी भी बड़ी अर्थव्यवस्था के लिए 12 रैंक का सुधार उल्लेखनीय उपलब्धि है। भारत अगर नियोजित आर्थिक सुधार बरकरार रखता है जिसमें वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) और नौकरशाही संबंधी लागत कम करता है तो देश के लिए अगले साल 100 शीर्ष कारोबार सुगमता वाले देशों में शामिल होना असंभव नहीं है। ■

पृष्ठ 10 का शेष...

प्रमाण पत्र वितरित किए। इससे पूर्व समारोह को संबोधित करते हुए केंद्रीय वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली ने कहा कि किसी व्यक्ति विशेष के पास पड़ा हुआ स्वर्ण उसकी व्यक्तिगत बचत हो सकती है, लेकिन यह देश के विकास में कोई योगदान नहीं देता। उन्होंने कहा कि आज के बाद स्वर्ण केवल सुरक्षा का माध्यम ही नहीं रहेगा, बल्कि इससे आय भी अर्जित की जा सकेगी एवं यह राष्ट्र निर्माण का हिस्सा भी बन जाएगा। वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली ने यह भी कहा कि आज शुभारंभ इन तीन स्वर्ण संबंधित योजनाओं के बाद सोने का आयात कम हो जाएगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि देश के नागरिक इन तीन स्वर्ण योजनाओं का लाभ उठाएंगे। इस अवसर पर वाणिज्य राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती निर्मला सीतारमण और वित्त राज्यमंत्री श्री जयंत सिन्हा भी उपस्थित थे। ■

प्रधानमंत्री ने सोनीपत में तीन राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला रखी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 5 नवंबर को हरियाणा के सोनीपत में तीन राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला रखी।

प्रधानमंत्री ने एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पैसा सड़कें नहीं बनाता है, बल्कि सड़कें ही पैसे का सृजन करती हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सड़कें और बिजली जैसी बुनियादी ढांचागत परियोजनाएं विकास की पहली शर्त हैं। उन्होंने कहा कि एक बार जब बुनियादी ढांचागत परियोजनाएं बाकायदा वजूद में आ जाती हैं तो विकास की गति तेज होती है और

इसके साथ ही जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार होता है। श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि इन राजमार्गों की बदौलत हरियाणा के विकास को नई गति मिलेगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी लाने के लिए इनकी राह की बाधाओं को हटाने के साथ-साथ प्रक्रियाओं को आसान बना रही है। उन्होंने विभिन्न मंत्रालयों के साथ होने वाली 'प्रगति' संबंधी चर्चाओं का भी जिक्र किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि लंबित परियोजनाओं से जुड़े मुद्दों को सुलझाने के लिए वह हर महीने 'प्रगति' संबंधी संवाद की अध्यक्षता करते हैं।

प्रधानमंत्री ने 1000 दिनों के भीतर बगैर बिजली सुविधा वाले 18,000 गांवों को पावर कनेक्शन मुहैया कराने या वहां विद्युत सप्लाई सुनिश्चित करने संबंधी अपने विजन का फिर से उल्लेख किया। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने वर्ष 2022 तक देश के सभी हिस्सों में सप्ताह के सातों दिन चौबीस घंटे यानी हर वक्त विद्युत सप्लाई सुनिश्चित करने के अपने विजन का भी पुनः जिक्र किया।

केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी और चौधरी वीरेंद्र सिंह भी इस अवसर पर उपस्थित थे। ■

भारत दुनिया का सातवां सबसे मूल्यवान नेशन ब्रांड

भारत दुनिया का सातवां सबसे मूल्यवान नेशन ब्रांड बन गया है। उसकी ब्रांड वैल्यू में 32 पर्सेंट का इजाफा हुआ है और वह एक पॉजिशन और ऊपर चला गया है। भारत की ब्रांड वैल्यू अब 2.1 अरब डॉलर पर पहुंच गई है। वर्ल्ड्स मोस्ट वैल्युबल नेशंस ब्रैंड्स की एनुअल रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका 19.7 बिलियन डॉलर के ब्रैंड वैल्यू के साथ टॉप पर कायम है। उसके बाद चीन दूसरे और जर्मनी तीसरे नंबर पर है। भारत ने इस सूची में एक स्थान की छलांग लगाई है। पिछली लिस्ट में भारत आठवें पायदान पर था। इस लिस्ट में सबसे बड़ी बात यह है कि भारत का नेशन ब्रैंड वैल्यू में 32 प्रतिशत का ग्रोथ, सूची में शामिल किसी भी देश के ग्रोथ से ज्यादा है। वर्ल्ड्स मोस्ट वैल्युबल नेशंस ब्रैंड्स की एनुअल रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि भारत का इन्क्रेडबल इंडिया स्लोगन ने अच्छा काम किया है। ■

स्वतंत्रता स्वयं साध्य नहीं केवल साधन है

(भारत का समन्वयवाद ही पूँजीवाद और तानाशाही के दोषों का हल है)

– दीनदयाल उपाध्याय

संघ जीवन के शाश्वत तत्त्वों का उपासक

अब से प्राय: तीन हजार वर्ष पूर्व भारतवर्ष के जन-जीवन में कर्म, चेतना, क्रांति-भावना तथा महत्त्वाकांक्षाओं का उदय हुआ था और उस समय इस देश के समस्त समाज ने अपने-अपने क्षेत्र में उन महत्त्वाकांक्षाओं का प्रकटीकरण कला-कौशल तथा वाणिज्य व्यवसाय की उन्नति, छात्रबल के विकास तथा ब्राह्मणों द्वारा स्याम, इंडोचायना, चीन और जापान आदि में ज्ञानदीप के प्रकाश का प्रसार करके वृहत्तर भारत में सांस्कृतिक साम्राज्य की स्थापना द्वारा किया था। वह हमारा स्वर्णयुग था।

'कर्म, चेतना, जनजागरण और महत्त्वाकांक्षाओं के प्रकटीकरण की वह भावना भले ही कभी रुक गई हो परंतु जाह्नवी की धारा के सदृश वह पुन: अब प्रकट हो चली है, और संसार की कोई शक्ति इस प्रवाह को अब रोक नहीं सकती।'

स्वतंत्रता स्वयं साध्य नहीं केवल साधन है। जेल से बाहर हुए आदमी के सदृश कुछ करने के लिए हमारे साथ खुल जाते मात्र हैं, कुछ उत्तरदायित्व हमारे ऊपर आ जाता है। केवल देश के निर्माण करने के लिए भला या बुरा, जैसा भी हम चाहें, हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई है।

पुरुषार्थ चाहिए, नारे नहीं

आज देश के व्याप्त अभावों की पूर्ति के लिए हम सभी व्यग्र हैं, अधिकाधिक परिश्रम करने तथा आदि के नारे भी सभी लगाते हैं। परंतु वस्तुत: नारों के अतिरिक्त अपनी इच्छानुसार सुनहले स्वप्नों, योजनाओं तथा महत्त्वाकांक्षाओं के अनुकूल देश का चित्र निर्माण करने के लिए उचित परिश्रम और पुरुषार्थ करने को हमसे पिचानवें प्रतिशत लोग तैयार नहीं हैं। जिसके अभाव में ये सुंदर-सुंदर चित्र शेखचिल्ली के स्वप्नों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। आज सारा देश इस शेखचिल्ली की प्रवृत्ति से ही ग्रसित है। वस्तुत: धन कमानेवाला ही उसका मूल्य समझ सकता है। कोई कुछ भी कहे आज देश में व्याप्त अधिकाधिक अधिकार प्राप्ति की प्रवृत्ति और स्वतंत्रता से कुछ लूट मचाने की इच्छा दिखती है। हमारी स्वतंत्रता जनसाधारण के पुरुषार्थ और पराक्रम से प्राप्त न होने के कारण ही ऐसा है और इसीलिए हममें कर्म चेतना और देश के निर्माण के हेतु परिश्रम करने की भावना नहीं है।

साध्य, साधन का भ्रम

इस समय हम चौराहे पर खड़े हैं और देश तथा समाज के उत्थान के संबंध में निश्चित दृष्टि और प्रगति की एक दिशा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। हमें यह समझ लेना चाहिए कि जिन साधनों का हमने अब तक पालन किया है उनका आगे भी पालन करना आवश्यक नहीं है। नवीन परिस्थितियों के अनुकूल अपने मार्गों तथा साधन में परिवर्तन करना ही योग्य है। स्वतंत्रता को साधारण समझने के कारण ही आज हमारी यह अवस्था है। परंतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्मुख कभी ऐसी समस्या अपनी निश्चित दिशा के संबंध में उपस्थित नहीं हुई। उसके संस्थापक ने आरंभ से ही अपनी दूरदर्शिता के कारण स्पष्ट दृष्टि हम सबको प्रदान की थी। सदैव से ली जानेवाली हमारी प्रतिज्ञा में संघ का ध्येय हिंदू राष्ट्र को स्वतंत्र कर, उसके धर्म, समाज तथा संस्कृति की रक्षा और सर्वांगीण उन्नति और राष्ट्र को परम वैभव के शिखर पर ले जाने के लिए अपने तन-मन-धन तथा सर्वस्व त्याग करने की रही है। इससे स्पष्ट है कि स्वतंत्रता हमारे लिए वेतन साधन मात्र रही है, साध्य नहीं। देश के निर्माण में योग देने का हमें अब सुअवसर मिला है, इसका उपयोग करें और देश में स्वर्ण युग की अग्रदूतिका के रूप में वही कर्म चेतना, क्रांति तथा महत्त्वाकांक्षा का निर्माण कर दें।

संघ चिरंतन तत्त्वों का उपासक

संघ पर बहुधा पुरातनवादी, प्रगति विरोधी और प्रतिक्रियावादी होने का आरोप लगाया जाता है। यह सिद्धांत सर्वविदित है कि संसार में सदैव ही परिवर्तन हुआ करते हैं। वस्तुत: प्रत्येक वस्तु में क्षण-क्षण होने वाला यह परिवर्तन और नवीनता रमणीय है। परंतु 'जो वस्तु' परिवर्तित हुआ करती है उसके जो तत्त्व जीवन के सत्य तत्त्व हैं वह तो स्थायी हैं। नव-निर्माण हम भी चाहते हैं, परंतु इस नव-निर्माण के नाम पर अपने

सत्य तत्त्वों के मिलने को भी हम बरदाश्त नहीं कर सकते। 'जीवन का अंत मृत्यु है, पचास वर्ष बाद आखिर हमें मरना तो है ही, जीवन का वह अंतिम परिणाम प्राप्त करने के लिए हमें आत्महत्या कर लेनी चाहिए।' इस प्रकार इजिप्ट के एक दार्शनिक का तर्क हमें मान्य नहीं। हम तो जब तक जीवित रहें, गौरवपूर्ण ढंग से जीवित रहना चाहते हैं। जीवन के सत्य तत्त्वों का विकास करने के प्रयास में होने वाले समस्त परिवर्तन हमें मान्य हैं, अपनेपन को संसार के सन्मुख व्यक्त करें तथा उसकी रक्षा, उन्नति और विकास के लिए हम कोई भी आधुनिकतम परिवर्तन स्वीकार करने को उद्यत हैं। ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति सभी क्षेत्रों में अपने जीवन के विकास के लिए जो भी आवश्यक होगा, वह हम स्वीकार करेंगे।

विजातीय होते हुए भी शरीर के पोषण के लिए आवश्यक अनेकों तत्त्वों को शरीर की सामर्थ्य के अनुसार हम स्वीकार करते हैं। परिवर्तनशीलता के कारण शरीर का चमड़ा बदल जाता है, परंतु केवल नवीनता को ही आदर्श मानकर कृत्रिम तथा अस्वाभाविक उपायों द्वारा शरीर का ही परिवर्तन तो उचित नहीं। केवल मात्र नवीनता के ही पीछे चलकर तो हम अपने जीवन के सत्य तत्त्वों को खो देंगे, हमारा जीवन ही उससे नष्ट हो जाएगा। केवल नवीनता के ही पुजारी बनकर आवश्यक अथवा अनावश्यक सभी कुछ प्राप्त करने की धुन तो बिलकुल उचित नहीं। हम नवीनता के विरोधी नहीं और न प्राचीनता के नाम पर रूढ़ियों और मृत परंपराओं के हम अंध उपासक हैं। मृत पिता या पितामह के शरीर को हम केवल पुराना होने के कारण उसको उठाकर रखने तथा उसकी उपासना करने के पक्ष में नहीं हैं, अपितु उसका आदरपूर्वक हम दाह-संस्कार करके उसका अस्थि विसर्जन करेंगे।

नवीनता की इस धुन में अनेक अभारतीय तत्त्व और विचारधाराएँ हमारे देश में प्रविष्ट हो गई हैं। ऐसी प्रवृत्तियाँ हमारे जीवन के लिए घातक हैं। केवल विजातीय तथा विदेशी होने के कारण ही हम इनका विरोध नहीं करते हैं, दूसरे देशों से प्रेम, सहकार्य, सद्भावना आदि अनेक अपने जीवन के लिए लाभप्रद बातें हम सोच सकते हैं।

व्यक्तिवाद और तानाशाही अवांछनीय

साम्यवाद तथा समाजवाद के सिद्धांत का आधार अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्यनुसार कार्य करे और उसकी आवश्यकतानुसार उसे दिया जाए। परंतु इस सिद्धांत का अंतिम परिणाम प्रत्येक देश में तानाशाही होता है क्योंकि यह मानव स्वभाव के प्रतिकूल बैठता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वभाव से ही कार्य कम-से-कम करने का प्रयत्न करता है और आवश्यकताएँ अधिक बना लेता है। कानून से यह सिद्धांत लागू करने का यही परिणाम होता है और फिर इस सिद्धांत को माननेवाले किसी भी देश में जनता से अधिकतम कार्य कराने और अपनी आवश्यकताएँ कम करने के लिए तानाशाही ही आवश्यक विकल्प होता है। वस्तुत: उपरोक्त सिद्धांतानुसार देश की व्यवस्था भारतीय आदर्शों पर चलने से ही संभव है जहाँ अंत:स्फूर्ति से ही अपनी इच्छाओं को दमन कर कम-से-कम आवश्यकताएँ रखनेवाले को ही सम्मान प्राप्त होता है। भारतीय आदर्शनुसार एक कोपीनधारी संन्यासी जिसकी आवश्यकताएँ नगण्य होती हैं और जो निरंतर अथक परिश्रम केवल समाज के ही हेतु करता है, सर्वाधिक सम्मानित माना जाता है। सम्मिलित भारतीय कौटुंबिक जीवन में भी हमें यही देखने को मिलता है कि सर्वाधिक कार्य करनेवाले गृहस्वामी अपनी न्यूनतम आवश्यकताएँ रखता है और अन्य आश्रितों की ही आवश्यकतापूर्ति की ओर ध्यान देता है। जीवन का ध्येय ही आवश्यकतापूर्ति नहीं हो सकता। अपनी आवश्यकतानुसार जो हम चाहेंगे वह ले लेंगे, स्वयं आवश्यकताओं के दास हम नहीं होंगे।

अमेरिका और रूस आज क्रमश: व्यक्तिवाद तथा समष्टिवाद के प्रतीक हैं। व्यक्तिवाद हमें अंत में पूँजीपतियों के हाथ का खिलौना और उनके शोषण का पात्र बनाता है और रूस के सिद्धांत को मानने से मनुष्य का व्यक्तित्व ही समाप्त हो जाता है। हम इन दोनों में समन्वय करके इनका मध्यवर्ती मार्ग अपनाना चाहते हैं, भारतीय विचारधारा ऐसे ही मार्ग को मान्य बताती है।

नवनिर्माण की भावना तथा जीवन के सत्य तत्त्वों को सदैव ही हम अभारतीय तत्त्वों से रक्षा करेंगे और इस प्रकार जीवन के समस्त क्षेत्रों में अपने सत्य तत्त्वों का विकास कर हम संसार को कुछ देने में समर्थ हो सकेंगे और देश के स्वर्ण युग को भी सन्निकट ला सकेंगे।

उपरोक्त ओजस्वी उद्बोधन द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहप्रांतीय प्रचारक के रूप में श्री दीनदयालजी उपाध्याय ने लगभग डेढ़ घंटे तक दिए गए अपने धारा प्रवाह सारगर्भित भाषण में गाजियाबाद जिला संघ कार्यकर्ताओं को संघ कार्य में प्रगति करने को प्रेरणा देते हुए विदा किया। ■

(पांचजन्य, आश्विन कृष्ण 2, वि. सं. 2007)

श्रद्धांजलि-जयंती-19 नवंबर

प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक के. आर. मलकानी

(19 नवम्बर 1921-27 अक्टूबर 2003)

केवलराम रतनमल मलकानी (के. आर. मलकानी) एक प्रखर चिंतक, राजनेता, आदर्शवादी, सैद्धांतिक पत्रकार व कर्मयोगी थे। वे भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष एवं पांडीचेरी के राज्यपाल रहे। वह एक समर्थ विचारक एवं लेखक भी थे। मलकानी जी का जन्म 19 नवंबर, 1921 को हैदराबाद (सिन्ध) में हुआ था। युवाकाल में ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गए और 1941 से 2003 तक वे आजीवन संघ के निष्ठावान स्वयंसेवक रहे। मलकानी जी भारतीय जनसंघ के जन्मकाल से ही उसके सिद्धान्तकार बन गए। उनके ही आग्रह पर पं० दीनदयाल उपाध्याय ने आर्गेनाइजर में साप्ताहिक 'पालिटिकल डायरी' लिखना प्रारंभ किया।

इन्दिरा गांधी की सरकार मलकानी जी को अपना एक बड़ा शत्रु मानती थी। आपातस्थिति की घोषणा के बाद मलकानी जी सबसे पहले पकड़े गए और पूरे उन्नीस महीने जेल काटकर आपातकाल समाप्त होने पर छोड़े गए। उनके जेल-जीवन की कहानी उनकी कलम से 'मिडनाईट नॉक' नामक पुस्तक के रूप में सामने आयी।

मलकानी जी अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के थे। अनावश्यक प्रदर्शन और मिलना-जुलना उनके स्वभाव में नहीं था, किन्तु उनका अन्त:करण निर्मल और स्वभाव बहुत पारदर्शी था। लाग-लपेट की उन्हें आदत नहीं थी। जब भी वे बात करते खुलकर बात करते थे। वे निर्भीक थे, नि:स्वार्थी थे। उनका जीवन बहुत सादा और कठिन था। 1971 में 'मदरलैंड' नामक दैनिक पत्र प्रारंभ हुआ। मदरलैंड के संपादन का जिम्मा व प्रबंधन मलकानी जी पर था। हालांकि प्रारम्भ में डी. आर. मनकेकर इसके संपादक थे, लेकिन वास्तविक संपादन का कार्य मलकानी जी ही देखते थे। 'मदरलैंड' की इंदिरा सरकार से सीधी टक्कर थी, इसलिए इंदिरा सरकार मलकानी जी को अपना एक बड़ा शत्रु मानती थी। आपातस्थिति की घोषणा के बाद मलकानी जी सबसे पहले पकड़े गए और पूरे उन्नीस महीने जेल काटकर आपातकाल समाप्त होने पर छोड़े गए। उनके जेल जीवन की कहानी उनकी कलम से 'मिडनाईट नॉक' नामक पुस्तक के रूप में सामने आयी। 'मदरलैंड' बंद होने के बाद मलकानी जी पुन: आर्गेनाइजर के संपादक पद पर वापस आये और 1982 में 62 वर्ष की आयु में आर्गेनाइजर के संपादक दायित्व से निवृत्त हुए। मलकानी जी भाजपा के मुखपत्र 'बीजेपी टुडे' का भी संपादन किया।

विभाजन की वेदना उनके मन में गहरी थी, अखण्ड भारत का सपना उनकी आंखों में था। इसके लिए वे सदैव संघर्ष करते रहे। साथ ही मलकानी जी दिल्ली में सिंधी समाज को संगठित करने के लिए मंच की स्थापना की और वे उसके पहले अध्यक्ष बने। मलकानी जी भारतीय जनता पार्टी की केन्द्रीय कार्यसमिति में आमंत्रित रहते थे। जब उन्हें उपाध्यक्ष पद सौंपा गया तब उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान के गैर राजनीतिक चरित्र का आदर करते हुए उसके दायित्वों से मुक्ति ले ली और वे उपाध्यक्ष के नाते भाजपा के केन्द्रीय कार्यालय में पूरे समय बैठने लगे। 1994 से 2000 तक वे राज्यसभा के सदस्य रहे, पर उनकी कलम कभी रुकी नहीं।

मलकानी जी आजन्म योद्धा रहे। संपादक के पत्र स्तंभ हो, या टेलीविजन पर बहस, हर जगह मलकानी जी का राष्ट्रवादी स्वर गूंजता रहा। वे राष्ट्रवाद के विरोधियों से लोहा लेते रहे। वे जुलाई 2002 में पांडिचेरी के उपराज्यपाल पद पर नियुक्त हुए। राजभवन में भी वे सबको स्मरण करते रहे और लेखन में जुटे रहे। 27 अक्टूबर 2003 को उन्होंने अंतिम सांस ली। मलकानी जी का जीवन आदर्शवादी, सिद्धान्तनिष्ठ पत्रकारिता के लिए प्रकाशस्तंभ है, प्रेरणास्रोत है।

मलकानी जी आजन्म योद्धा रहे। संपादक के पत्र स्तंभ हो, या टेलीविजन पर बहस, हर जगह मलकानी जी का राष्ट्रवादी स्वर गूंजता रहा। वे राष्ट्रवाद के विरोधियों से लोहा लेते रहे। वे जुलाई 2002 में पांडिचेरी के उपराज्यपाल पद पर नियुक्त हुए। राजभवन में भी वे सबको स्मरण करते रहे और लेखन में जुटे रहे। मलकानी जी का जीवन आदर्शवादी, सिद्धान्तनिष्ठ पत्रकारिता के लिए प्रकाशस्तंभ है, प्रेरणास्रोत है।

तीसरा भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन

एक-दूसरे की चुनौतियों का मिलकर सामना करेंगे भारत-अफ्रीका

25 अक्टूबर से शुरू हुआ पांच दिवसीय तीसरा भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन कई मामलों में ऐतिहासिक रहा। भारत में ऐसा पहली बार हुआ है कि अफ्रीका के 40 राष्ट्राध्यक्ष किसी सम्मेलन में शामिल हुए हों। सच में यह सम्मेलन भारत और अफ्रीका के चार हजार साल पुराने संबंधों की पुनरावृत्ति है। इस सम्मेलन में यह संकल्प लिया गया कि एक-दूसरे की चुनौतियों को भारत-अफ्रीका मिलकर सामना करेंगे।

देश की राजधानी नई दिल्ली में पांच दिनों तक चले भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन (25-29 अक्टूबर) इस संकल्प के साथ समाप्त हुआ कि भारत-अफ्रीका एक दूसरे की चुनौतियों का मिलकर सामना करेंगे। यह पहली बार हुआ कि जब सभी 54 अफ्रीकी राष्ट्र भारत की मेजबानी में इस तरह की बैठक के लिए महाद्वीप से बाहर एकत्रित हुए, इनमें से 40 देशों का प्रतिनिधित्व उनके राष्ट्राध्यक्षों ने किया।

इससे पहले दो भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन 2008 व 2011 में क्रमशः नई दिल्ली व अदीस अबाबा में हुए थे, लेकिन तब न तो इतने देश एक साथ आए थे, न ही राष्ट्राध्यक्ष। संयुक्त राष्ट्र में स्थायी सीट के लिए अफ्रीका का साथ भारत के लिए जरूरी है। यह सुखद है कि सम्मेलन में प्रस्ताव पास कर सभी अफ्रीकी देशों ने एक स्वर में भारत का समर्थन किया है। इस बदलाव को देखते हुए कहा जा रहा है हमारे प्रति अफ्रीका का विश्वास बढ़ा है। यह भरोसा ही भारत के साथ उन देशों के संबंधों को नया आयाम देगा।

गौरतलब है कि भारत और अफ्रीका के संबंध चार हजार वर्ष पुराने हैं। दोनों ने उपनिवेशवाद के खिलाफ जोरदार आवाज उठाई। इसके बाद दोनों के बीच संबंध गुटनिरपेक्ष आंदोलन के समय में और मजबूत हो गए। कहा जाता है कि लाखों वर्ष पहले भारत-अफ्रीका एक ही भू-भाग था। बाद में हिंदमहासागर से ये दो टुकड़े में विभाजित हुए। इसीलिए दोनों के बीच कई तरह की समानताएं हैं। आज जितनी जनसंख्या भारत की है उतनी ही जनसंख्या अफ्रीकी देशों की है। दोनों की दो तिहाई आबादी 35 साल से नीचे की है। करीब 27 लाख भारतीय इन देशों में लंबे काल से बसे हुए हैं।

अफ्रीकी देशों की युवा पीढ़ी को प्रशिक्षित करने में भारत अहम भूमिका निभाता है। अभी 25 हजार से ज्यादा

अफ्रीकी छात्र भारत में पढ़ रहे हैं। आज अफ्रीका के कई देशों के नेता भारत में पढ़ कर गए हैं। हालांकि इसके बाद भी भारत-अफ्रीका के बीच आर्थिक संबंध चीन और दूसरे पश्चिमी देशों की तुलना में मजबूत नहीं हो पाया है। भारत-अफ्रीका के बीच अभी कारोबार 70 अरब डॉलर का है जबकि चीन से उसका कारोबार 200 अरब डॉलर का है।

इस सम्मेलन की सफलता को देखते हुए कहा जा रहा है कि आने वाले दिनों में दोनों के बीच आर्थिक सहयोग को वह मुकाम हासिल हो सकेगा जिसकी वर्षों से दरकार है। दरअसल, अफ्रीका आर्थिक रूप से तेजी से बढ़ रहा है। वहां अकूत खनिज भंडार, मानव संपदा और तेजी से उभरता बाजार है। वहीं भारत के पास क्षमता, विकास और तकनीक का ऐसा पैकेज है जो अफ्रीकी जरूरतों को पूरा कर सकता है।

हालांकि वहां बुनियादी ढांचा का अभाव और बिजली की समस्या है, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने उसके ढांचागत विकास और बिजली की समस्या दूर करने की बात कही है। इसके अलावा भारत उसको आतंकवाद से लड़ाई में भी सहयोग देगा। ऐसे में माना जा रहा है कि भारत और अफ्रीका का यह शिखर सम्मेलन सवा दो अरब लोगों और दुनिया की करीब एक तिहाई आबादी के बीच नई साझेदारी की शुरुआत करेगा।

अफ्रीका को 10 अरब डॉलर का रियायती कर्ज और 60 करोड़ डॉलर की मदद देगा भारत

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 29 अक्टूबर को भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन के आखिरी दिन अफ्रीका को 10 अरब डॉलर का कर्ज देने की घोषणा की। यह मौजूदा कर्ज कार्यक्रम के अतिरिक्त होगा। श्री मोदी ने कहा कि अफ्रीकी देशों के साथ भारत की साझेदारी को मजबूती देने के लिए अगले पांच साल में अफ्रीका को 10 अरब डॉलर का रियायती कर्ज मुहैया कराया जाएगा, जो मौजूदा ऋण कार्यक्रम से अलग होगा।

श्री मोदी ने भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन के आखिरी दिन अफ्रीकी महाद्वीप को 60 करोड़ डॉलर की आर्थिक सहायता और भारत में अफ्रीकी देशों के छात्रों को 50,000 छात्रवृत्तियां देने का वादा भी किया। उन्होंने कहा कि हम 60 करोड़ डॉलर की बड़ी आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगे, जिसमें भारत-अफ्रीका विकास कोष का 10 करोड़ डॉलर और भारत-अफ्रीका स्वास्थ्य कोष का एक करोड़ डॉलर शामिल होगा। श्री मोदी ने कहा कि इसमें अगले पांच साल में भारत में 50,000 छात्रवृत्तियां भी शामिल होंगी। इससे पैन अफ्रीका ई-नेटवर्क और अफ्रीकी देशों में कौशल एवं प्रशिक्षण संस्थानों के विस्तार में मदद मिलेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि भारत और अफ्रीकी देशों की यह मुलाकात दुनिया की एक तिहाई मानवजाति को एक छत के नीचे ले आई है। उन्होंने

भारत, अफ्रीकी देशों के साथ हाइड्रोकार्बन सहयोग बढ़ाने का इच्छुक

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र प्रधान ने तीसरे भारत अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन (आईएएफएस) से इतर विभिन्न अफ्रीकी देशों के उच्चाधिकारियों से मुलाकात की। उन्होंने नाइजीरिया और घाना के राष्ट्रपतियों, अंगोला और तंजानिया के उपराष्ट्रपतियों, मोजाम्बिक के प्रधानमंत्री, दक्षिण सूडान के तेल एवं गैस मंत्री, अल्जीरिया के वैश्विक मामलों के मंत्री तथा गैबॉन के आर्थिक मामलों के मंत्री से मुलाकात की।

श्री प्रधान ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ नाइजीरिया, सूडान, दक्षिण सूडान और गैबॉन के राष्ट्रपतियों, मोजाम्बिक के प्रधानमंत्री तथा तंजानिया और अंगोला के उपराष्ट्रपतियों से द्विपक्षीय बैठकें की। इन बैठकों में कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई जिनमें तेल एवं गैस क्षेत्र में सहयोग पर मुख्य तौर पर बातचीत हुई। यह भी निर्णय लिया गया कि चौथा भारत अफ्रीका हाइड्रोकार्बन सम्मेलन 21 और 22 जनवरी 2016 को नई दिल्ली में होगा।

उल्लेखनीय है कि भारत, अफ्रीका से 33 एमएमटी कच्चे तेल का आयात करता है जो कच्चे तेल के कुल आयात का 18 फीसदी है। भारत की तेल एवं गैस की सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों ने मोजाम्बिक, सूडान और दक्षिण सूडान में तेल एवं गैस पूंजियों में आठ अरब डॉलर का निवेश कर रखा है। ईआईएल विभिन्न देशों में तेल शोधन क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। माननीय प्रधानमंत्री ने 27 मार्च 2015 को ऊर्जा संगम के दौरान भारत में ऊर्जा सुरक्षा के लिए अफ्रीका पर ध्यान केंद्रित करने को कहा था।

कहा कि 1.25 अरब भारतीयों और 1.25 अरब अफ्रीकियों के दिलों की धड़कन एक है। यह सिर्फ भारत और अफ्रीका की मुलाकात नहीं है। आज एक-तिहाई मानवजाति के सपने एक छत के नीचे इकट्ठा हुए हैं।

एक-दूसरे के लिए बने हैं भारत-अफ्रीका : नरेन्द्र मोदी

संसाधन संपन्न अफ्रीका में भारत की मजबूत मौजूदगी दर्ज कराने के मकसद से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 28 अक्टूबर को अफ्रीकी महाद्वीप के 19 देशों के राष्ट्राध्यक्षों से व्यापक वार्ता की जिसमें आतंकवाद की समस्या से लड़ने और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की दिशा में काम करने पर मुख्य रूप से ध्यान दिया गया।

श्री मोदी ने अफ्रीकी नेताओं के साथ द्विपक्षीय बातचीत में इस बात पर जोर दिया कि अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सफलता तभी मिल सकती है जब वैश्विक स्तर पर समन्वित कार्रवाई हो, वहीं संयुक्त राष्ट्र सुधारों पर कहा गया कि मिलकर काम करने और कड़ा रुख अपनाने का समय है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भारत-अफ्रीका के संबंधों को और विस्तार देने की वकालत करते हुए अफ्रीका संघ आयोग के अध्यक्ष एनडी जुमा से कहा कि भारत और अफ्रीका एक-दूसरे के लिए बने हैं।

29 अक्टूबर को यहां आयोजित होने वाले भारत अफ्रीका फोरम शिखर-सम्मेलन में शामिल होने आए अफ्रीकी नेताओं ने स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, खनन, ऊर्जा, पर्यटन और मत्स्यपालन समेत कई क्षेत्रों में भारत की सहायता की मांग की।

आतंकवाद को दुनिया भर में बड़ा खतरा बताते हुए श्री मोदी ने कहा कि इसके खिलाफ लड़ाई में कानूनी अंतराल को समाप्त करने की जरूरत है। श्री मोदी ने जिम्बाब्वे के राष्ट्रपति श्री रॉबर्ट मुगाबे, घाना के राष्ट्रपति श्री जॉन डी महामा, स्वाजीलैंड के राजा श्री एमस्वाति तृतीय, बेनिन के राष्ट्रपति श्री बोनी यायी, नाइजीरियाई राष्ट्रपति श्री मुहम्मद बुहारी, केन्या के राष्ट्रपति श्री उहुरू केनयात्ता, युगांडा के राष्ट्रपति श्री योवरी कागुता मुसेवेनी, लिसोथे के प्रधानमंत्री श्री बेथुअल पी मोसिसिली समेत अफ्रीकी नेताओं से द्विपक्षीय बातचीत की। उन्होंने गिनी के राष्ट्रपति श्री अल्फा कोंडे, जिबूती के राष्ट्रपति श्री इस्माइल उमर, नाइजर के राष्ट्रपति श्री आई महमादू, दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति श्री जैकब जी जुमा और मोजांबिक के प्रधानमंत्री श्री कार्लोस अगस्टिन्हो डो रोजारियो से भी मुलाकात की।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता श्री विकास स्वरूप ने 19 द्विपक्षीय वार्ताओं की चर्चा करते हुए कहा कि यह एक तरह का नया रिकॉर्ड है। उन्होंने कहा कि सारी बैठकें अच्छी तरह से हुई। नाइजीरिया के राष्ट्रपति से मुलाकात में श्री मोदी ने वहां की जेल में बंद भारतीय चालक दल के 11 सदस्यों से जुड़ी न्यायिक प्रक्रिया को तेज करने का अनुरोध किया।

नाइजर के राष्ट्रपति ने भारत को यूरेनियम बेचने का प्रस्ताव दिया और अपने तेल क्षेत्र में भारत से बड़े निवेश की मांग की।

दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रपति श्री जैकब जुमा ने श्री मोदी से मुलाकात में वैश्विक शासन प्रणाली के सुधार की पुरजोर वकालत करते हुए कहा कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद बनाया गया संयुक्त राष्ट्र का ढांचा 21वीं सदी में प्रासंगिक नहीं हो सकता। श्री जुमा ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र में और खास तौर पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार के लिए सभी समान विचार वाले देशों का साथ में आना अहम है। उनका कहना था कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सदस्य देशों के वीटो अधिकारों की वजह से सीरियाई संकट समेत दुनिया के कई संघर्षों का समाधान नहीं निकल सका।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार पर लगभग सभी अफ्रीकी नेता भारत के साथ थे और उनका कहना था कि दुनिया की एक तिहाई आबादी को निर्णय लेने की प्रक्रिया से दूर नहीं रखा जा सकता। श्री मोदी से मुलाकात में जिम्बाब्वे के राष्ट्रपति और अफ्रीकी संघ के अध्यक्ष श्री रॉबर्ट मुगाबे ने संयुक्त राष्ट्र सुधारों और आतंकवाद के खतरे समेत समान हित के मुद्दों पर चर्चा की। श्री मुगाबे भारत अफ्रीका फोरम समिट के लिए सह-अध्यक्ष हैं और उन्होंने श्री मोदी के साथ सम्मेलन की तैयारियों की समीक्षा की।

श्री मोदी और नाइजीरियाई राष्ट्रपति श्री मुहम्मदू बुहारी की मुलाकात में उस देश में भारत की तेल खोजने की परियोजनाओं से जुड़े मामलों पर और रक्षा सहयोग पर चर्चा हुई। संयुक्त राष्ट्र में सुधारों का विषय भी आया। पेट्रोलियम मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान भी तेल और गैस भंडार वाले अधिकतर देशों के साथ बैठकों में श्री मोदी के साथ मौजूद रहे। केन्या, युगांडा, नाइजर समेत कई देशों ने भारत से आतंकवाद से निपटने में और रक्षा संबंधों को विस्तार देने में गहन सहयोग की मांग की। ■

राष्ट्रीय एकता के शिल्पी थे सरदार पटेल : नरेन्द्र मोदी

सरदार साहब, भारत की एकता के साथ एक अटूट नाता जिस महापुरूष का जुड़ा, वह सरदार साहब थे। वे लौहपुरूष के रूप में इसलिए नहीं जाने गए कि किसी ने उनको अखबार के कॉलम में उनका नाम लौहपुरूष के रूप में छाप दिया था। किसी ने प्रमाणपत्र दे दिया था, वे लौह पुरूष इसलिए माने गए और आज भी लौहपुरूष सुनते ही सरदार साहब का चित्र हमारे आंखों के सामने आ जाता है। उसका कारण उनके जीवन के हर निर्णय से जब भी उनको फैसले करने की नौबत आई, उस शक्ति के साथ उन्होंने किये, उस समझदारी के साथ किए और तब जा करके लौहपुरुष के नाम से वो हिंदुस्तान के अंदर अमर हो गए।

शायद दुनिया में बहुत कम लोग होते हैं कि जो एक से अधिक उपाधियों से नवाजित हो और सारी की सारी स्वीकृत हों। वे सरदार साहब के नाम से भी जाने गए, लौहपुरूष के नाम से भी जाने गए और दोनों चीजें बराबर बराबर साथ चलती रहीं। यह बहुत कम होता है।

भारत की एकता के लिए सरदार साहब का योगदान कम नहीं आंका जा सकता। अंग्रेजों का सपना था कि देश छोड़ने के बाद यह देश बिखर जाए। वो चाहते थे कि राजा-रजवाड़ों के बीच एक टकराव पैदा होगा और भारत कभी एकता के सूत्र में नहीं बंधेगा और इसके लिए उन्होंने अपने शासनकाल में विभाजनकारी जितनी भी बातों को बल दिया जाए, जितनी भी बातों के बीज बोये जाए हर कोशिश को करते रहे। लेकिन इतनी सारी कोशिशों के बावजूद भी यह सरदार साहब थे जिन्होंने भारत को एकता के सूत्र में बांध दिया। बहुत ही कम समय में बांध दिया और उसमें राजनीतिक कौशल्य का परिचय दिया।

अपनी लौह मज्जा का उन्होंने परिचय दिया। उन्होंने कौशल्य का परिचय दिया। राजा महाराजा, उनकी जो ऊंचाईयां थीं, समाज में जो उनका स्थान था। उसको मनाना कठिन काम था, लेकिन वो सारी बातें एक सीमित समय सीमा में सरदार साहब ने करके दिखाया। हिंदुस्तान के इतिहास की तरफ देखें, तो चाणक्य ने चार सौ साल पहले देश को एक करने के लिए भगीरथ प्रयास किया था और बहुत बड़ी मात्रा में सफलता पाई थी। चाणक्य के बाद भारत को एकता के सूत्र में बांधने का अगर कोई अहम काम किसी महापुरूष ने किया, तो वो सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया और उसी के कारण तो आज कश्मीर से कन्याकुमारी तक हम एक स्वर से उस भारत माता को याद करते हैं। भारत माता की जय बोलते हैं। उस मां का रूप सरदार साहब ने निखारने में बहुत बड़ी भूमिका अदा की थी। और इसलिए वो महापुरूष, जिसने एक भारत दिया उसे श्रेष्ठ भारत बनाना यह हम सबका दायित्व है। हम सबका कर्त्तव्य है और इसलिए एक भारत श्रेष्ठ भारत बने उसके लिए सवा सौ करोड़ देशवासियों का सामूहिक पुरूषार्थ आवश्यक है। निर्धारित लक्ष्य की ओर कदम से कदम मिला करके चलना आवश्यक है। हमारी गति को समय की मांग के अनुसार तेज करने की आवश्यकता है और वो प्रेरणा हमें सरदार साहब से मिलती है।

सरदार साहब महात्मा गांधी के भारत लौटने के बाद सरदार साहब

सार्वजनिक जीवन में आए। दिसंबर 1915 में सरदार साहब ने सार्वजनिक जीवन की शुरूआत की। इस दिसंबर में सरदार साहब की सार्वजनिक जीवन की यात्रा की शताब्दी का वर्ष प्रारंभ हो रहा है। और उस अर्थ में भी यह जीवन हमें किस प्रकार से प्रेरणा दे। हमारा निरंतर प्रयास रहना चाहिए।

सरदार साहब की कई विशेषताएं थीं। वे प्रांरभिक काल में अहमदाबाद में नगर निगम में नगर महापौर के रूप में चुने गए थे और नगर महापौर के रूप में चुनने के बाद आज बहुत लोगों को आश्चर्य होगा, नगर महापौर चुनने के बाद सरदार साहब ने अपने शासन के पहले 222 दिन अहमदाबाद शहर में एक स्वच्छता का बड़ा अभियान चलाया। प्रति दिन देश की निगरानी करते थे और सफाई का काम 1920, 22, 24 के कालखंड में सरदार साहब ने अहमदाबाद के मेयर के रूप में स्वच्छता के काम के लिए 222 दिन एक शहर के लिए अभियान चलाना, यह छोटी बात नहीं है। स्वच्छता का महत्व कितना उस समय भी था, यह सरदार साहब के व्यवहार से हमें नजर आता है और महात्मा गांधी बड़ी सटीक बातें बताने मे उनकी एक अहमियत रहती, एक विशेषता रहती थी।

सरदार साहब के इस अभियान के लिए, क्योंकि महात्मा गांधी को भी स्वच्छता बहुत प्रिय थी। तो सरदार साहब की यह 222 दिन की अखंड अविरत स्वच्छता अभियान को देख करके महात्माा गांधी ने बढ़िया कहा। उन्होंने कहा- अगर वल्लभ भाई पटेल कूड़े कचरे के भी सरदार बन जाते हैं तो अब मुझे सफाई की चिंता करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। गांधी की बातों में सटीकता है।

सरदार साहब की दूसरी विशेषता देखिए, रानी विक्टोरिया के सम्मान में, अहमदाबाद में एक रानी विक्टोरिया गार्डन बना हुआ है। जब सरदार साहब मेयर बने तो किस प्रकार से चीजों को चलाने की उनकी विशेषता थी। उन्होंने निर्णय किया रानी विक्टोरिया गार्डन भले है, लेकिन उसमें प्रतिमा तो लोकमान्य तिलक की लगेगी है। और मेयर रहते उन्होंने वहां पर लोकमान्य तिलक की प्रतिमा लगाई। अंग्रेजों का शासन था। रानी विक्टोरिया गार्डन था। लेकिन यह सरदार साहब की लौहशक्ति का अनुभव था। उन्होंने लोकमान्य तिलक की प्रतिमा लगाई। और प्रतिमा लगाई तो लगाई उन्होंने महात्मा गांधी को आग्रह किया कि आप इस प्रतिमा का लोकार्पण करिए और महात्मा गांधी विक्टोरिया गार्डन गए लोकमान्य तिलक जी की प्रतिमा का अनावरण किया। और उस दिन महात्मा गांधी ने एक बढ़िया वाक्य लिखा। उन्होंने लिखा कि सरदार साहब अहमदाबाद municipal corporation में आने के बाद एक नई हिम्मत का भी प्रवेश हुआ है। यानी सरदार साहब को किस रूप में गांधी जी देखते थे, वो इससे हमें ध्यांन में आता है।

आज कल हम महिला सशक्तिकरण की बातें करते हैं। महिला सशक्तिकरण कौन लाया, उसकी क्रेडिट कौन ले। उसके विषय में वाद-विवाद चलते रहते हैं। लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा, उस कालखंड में अंग्रेजों की सरकार थी। तब सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अहमदाबाद नगर निगम में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण का प्रस्ताव लाए। 50 प्रति आरक्षण 1930 के पहले की मैं बात कर रहा हूं। सरदार साहब महिला सशक्तिकरण के लिए उस समय कितने सजग थे ये हम देख रहे हैं। हिन्दुस्तान की राजनीति में परिवारवाद, भाई-भतीजावाद इसने जिस प्रकार से हमारी राजनीति प्रदूषित किया है। एक सरदार साहब का जीवन है जो हमें प्रेरणा देता है कि उनके परिवार के किसी व्यक्ति का नाम आज हिन्दुस्तान के राजनीतिक नक्शे पर दूर-दूर तक नजर नहीं आता है, कितना बड़ा संयम का पालन किया होगा। परिवार को कितना इन सारे राजनीतिक जीवन से दूर रखने का उन्होंने एक सुविचारित प्रयास किया होगा, इसके हमें दर्शन होते हैं।

मैं यहां पर एक संकल्प दोहराऊंगा। आप सबसे मेरा आग्रह है कि हम सभी आज मेरे साथ-साथ इस संकल्प को दोहराएंगे। हर किसी को अपने स्थान पर खड़े रहने के लिए मैं प्रार्थना करता हूं और हम भारत माता का मन में स्मरण करें, भारत के इन महापुरुषों का स्मरण करें और विशेष रूप से आज सरदार साहब की जन्म जयंती है, सरदार साहब का स्मरण करें और मेरे साथ बोलिये -

''मैं सत्य निष्ठा से शपथ लेता हूं कि मैं राष्ट्रीय एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित करूंगा, मैं अपने देशवासियों के बीच यह संदेश फैलाने का भी भरसक प्रयत्न करूंगा। मैं यह शपथ अपने देश की एकता की भावना से ले रहा हूं जिसे सरदार वल्लभभाई पटेल की दूरदर्शिता एवं कार्यों द्वारा संभव बनाया जा सका। मैं अपने देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपना योगदान करने का भी सत्यनिष्ठा से संकल्प करता हूं।'' ■

(राजपथ पर राष्ट्रीय एकता दिवस पर एकता के लिए दौड़ स्पर्धा से पहले प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के संबोधन का संपादित पाठ)

द ईज ऑफ डूइंग बिजनेस

– अरुण जेटली

विश्व बैंक ने ईज ऑफ डूइंग बिजनेस की रैंकिंग में भारत का स्थान 12 अंक ऊपर कर दिया है। पिछले महीने विश्व आर्थिक फोरम ने भी भारत को अपग्रेड किया था। हालांकि रैंक में सुधार मध्यम है लेकिन यह विपरीत रुझान को मोड़ने की शुरुआत है। सरकार ने पिछले 17 महीने में जो कदम उठाए हैं उन्हें देखते हुए भारत का स्थान खासा ऊंचा होना चाहिए था। मैं समझता हूं कि इन सभी कदमों को संज्ञान में नहीं लिया गया है क्योंकि विश्व बैंक का मानदंड एक निर्धारित तिथि पर आधारित है। साथ ही वह घोषणाओं का असर होने तक प्रतीक्षा भी करती है। फिर भी भारत की स्थिति में जो सुधार हुआ है उसमें त्वरित निर्णय प्रक्रिया, तीव्र नीतिगत बदलाव, शीर्ष स्तर पर भ्रष्टाचार खत्म होने और मंजूरी प्रक्रिया सरल होने की अहम भूमिका है। एफआइपीबी और पर्यावरण मंजूरी नियमित तौर पर दी जा रही हैं। निवेशकों को अब नीतियों में बदलाव या मंजूरियों के लिए दिल्ली आकर मंत्रालयों के आगे लाइन लगाने की जरूरत नहीं पड़ती।

ऐसा ही एक उत्साहजनक कारक यह है कि राज्यों ने भी अपनी कार्य संस्कृति में बदलाव किया है। निवेश सभी आर्थिक गतिविधियों का शुरुआती बिन्दु है। इसलिए एक निवेशानुकूल राज्य में स्वाभाविक तौर पर निवेश आएगा। राज्यों को इस बात का अहसास हो गया है। प्रतिस्पर्धी संघवाद देखा जा सकता है। वैश्विक निवेशकों की शिखर बैठक के गुजरात मॉडल को तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल और पंजाब ने अपनाया है। इस महीने राजस्थान भी वैश्विक निवेशकों को आकर्षित करने का प्रयास करेगा। तेलंगाना और आंध्र प्रदेश भी वैश्विक निवेशकों तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं। अच्छी खासी आदिवासी आबादी वाले तीन राज्य – छत्तीसगढ़, झारखंड, और उड़ीसा का विश्व बैंक की ईज ऑफ डूइंग बिजनेस की रैंकिंग में शीर्ष छह राज्यों में स्थान है। अधिकांश राज्यों में कार्य संस्कृति बदल रही है।

केंद्र सरकार ने पिछले हफ्ते दो महत्वपूर्ण अध्यादेश जारी किए। आर्बिट्रेशन लॉ (मध्यस्थता कानून) में बदलाव किए गए हैं ताकि मध्यस्थता को न्यायिक हस्तक्षेप से अलग सस्ता और त्वरित बनाया जा सके। निवेश संबंधी मामलों में न्यायिक प्रक्रिया शीघ्र पूरी करने के लिए सभी उच्च न्यायालयों में एक कमर्शियल डिवीजन स्थापित की जा रही है। इससे संविदा प्रवर्तन में सुधार आएगा जहां भारत की रैंक अपेक्षाकृत कमजोर है। पुराने पड़ चुके विशेष राहत कानून, जिसमें प्रवर्तन की जगह क्षतिपूर्ति का प्रावधान है, को भी संशोधित करने की जरूरत है। अधिकांश क्षेत्रों को विदेशी निवेश के लिए खोलने के बाद इस बात की समीक्षा करने की भी जरूरत है कि जिन शर्तों के आधार पर एफडीआइ की सिफारिश की गई थी वे कितनी प्रासंगिक हैं। हमें जरूरी मंजूरी की संख्या को भी कम करने की जरूरत है ताकि निवेश का निर्णय लेने और वास्तविक निवेश के बीच समय कम किया जा सके। राज्यों को भी यह बात समझनी चाहिए कि जिन स्थानीय कानूनों के तहत जमीन उपलब्धता, पर्यावरण मंजूरी, भवन योजना को मंजूरी दी जाती है उन पर भी पुन:विचार किया

विश्व बैंक ने ईज ऑफ डूइंग बिजनेस की रैंकिंग में भारत का स्थान 12 अंक ऊपर कर दिया है। पिछले महीने विश्व आर्थिक फोरम ने भी भारत को अपग्रेड किया था। हालांकि रैंक में सुधार मध्यम है लेकिन यह विपरीत रुझान को मोड़ने की शुरुआत है। सरकार ने पिछले 17 महीने में जो कदम उठाए हैं उन्हें देखते हुए भारत का स्थान खासा ऊंचा होना चाहिए था। मैं समझता हूं कि इन सभी कदमों को संज्ञान में नहीं लिया गया है क्योंकि विश्व बैंक का मानदंड एक निर्धारित तिथि पर आधारित है। साथ ही वह घोषणाओं का असर होने तक प्रतीक्षा भी करती है। फिर भी भारत की स्थिति में जो सुधार हुआ है उसमें त्वरित निर्णय प्रक्रिया, तीव्र नीतिगत बदलाव, शीर्ष स्तर पर भ्रष्टाचार खत्म होने और मंजूरी प्रक्रिया सरल होने की अहम भूमिका है।

जाए। एक बार अगर किसी टाउनशिप या औद्योगिक क्षेत्र को पर्यावरण मंजूरी मिल जाती है तो क्या उसमें बनने वाली किसी इकाई को अलग से पर्यावरण मंजूरी लेनी चाहिए? कई देशों में भवन योजना को मंजूरी देने की जगह किसी वास्तुविद के प्रमाणपत्र को ही स्वीकार करने की प्रणाली को अपना लिया है। जब आपको किसी भवन का निर्माण कार्य पूरा होने लिए प्रमाणपत्र अनिवार्य है तो निर्माण के लिए अनुमति की जरूरत को एक नियामक तंत्र बनाकर खत्म कर देना चाहिए। इन अतिरिक्त उपायों से भारत की ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग में और सुधार आएगा।

कारोबार शुरु करने की प्रक्रिया को सरल बनाने के साथ ही व्यवसाय बंद करने की प्रक्रिया भी सरल बनानी चाहिए। इसके लिए सरकार बैंकरप्सी लॉ (दिवालियेपन पर कानून) का मसौदा तैयार कर रही है। सार्वजनिक परियोजनाओं के संबंध में विवादों के शीघ्रता से निस्तारण के लिए एक तंत्र होना चाहिए। सरकार इस पर भी काम कर रही है।

सरकार ने प्राकृतिक संसाधनों और सार्वजनिक ठेकों के आवंटन की प्रक्रिया को भी पूरी तरह पारदर्शी बनाने के लिए काफी कुछ किया है। सरकारी अधिकारियों को आसानी तथा साहसिक निर्णय लेने का अधिकार देने के लिए भ्रष्टाचार निरोधक कानून के पुराने पड़ चुके प्रावधानों में भी सुधार की आवश्यकता है। सरकार ने इसे संसद में भी पेश कर दिया है। ऐसे समय जबकि पूरी दुनिया की विकास दर धीमी है, भारत तेजी से बढ़ना चाहता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार भारत की विकास दर को तेज करने की कोशिश कर रही है, कई लोग ऐसे हैं जिन्होंने बौद्धिक तौर पर सत्ता में भाजपा के विचार को स्वीकार नहीं किया है। स्वाभाविक तौर पर इसमें कांग्रेस, कई वामपंथी विचारक और कार्यकर्ता शामिल हैं। कई दशकों से वे भाजपा के प्रति वैचारिक असहिष्णुता का बर्ताव कर रहे हैं। 2002 से स्वयं प्रधानमंत्री वैचारिक असहिष्णुता के शिकार हुए हैं। ऐसे लोगों की दोतरफा रणनीति है। पहला, संसद में व्यवधान डालो और सुधार मत होने दो क्योंकि ऐसा होने पर मोदी सरकार को श्रेय मिलेगा। दूसरे, संगठित दुष्प्रचार के माध्यम से ऐसा माहौल बनाइए कि भारत में सामाजिक संघर्ष है। वे भारत को एक असहिष्णु समाज के तौर पर प्रचारित करना चाहते हैं।

हमारी मौजूदा विकास दर में एक या दो प्रतिशत की बढ़ोत्तरी के लिए कारोबार शुरु करने की सुगम प्रक्रिया के साथ ही सरल प्रत्यक्ष और परोक्ष कर व्यवस्था तथा सिंचाई और ढांचागत क्षेत्र में अधिक निवेश महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। तेल और वस्तुओं की सस्ती दर भी इस दिशा में सरकार के लिए मददगार है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार भारत की विकास दर को तेज करने की कोशिश कर रही है, कई लोग ऐसे हैं जिन्होंने बौद्धिक तौर पर सत्ता में भाजपा के विचार को स्वीकार नहीं किया है। स्वाभाविक तौर पर इसमें कांग्रेस, कई वामपंथी विचारक और कार्यकर्ता शामिल हैं। कई दशकों से वे भाजपा के प्रति वैचारिक असहिष्णुता का बर्ताव कर रहे हैं। 2002 से स्वयं प्रधानमंत्री वैचारिक असहिष्णुता के शिकार हुए हैं। ऐसे लोगों की दोतरफा रणनीति है। पहला, संसद में व्यवधान डालो और सुधार मत होने दो क्योंकि ऐसा होने पर मोदी सरकार को श्रेय मिलेगा। दूसरे, संगठित दुष्प्रचार के माध्यम से ऐसा माहौल बनाइए कि भारत में सामाजिक संघर्ष है। वे भारत को एक असहिष्णु समाज के तौर पर प्रचारित करना चाहते हैं। जबकि सच्चाई बिल्कुल अलग है। इस दुष्प्रचार के षड्यंत्रकारियों ने विश्वविद्यालयों, शैक्षिक संस्थानों और सांस्कृतिक संगठनों में, जिनको ये नियंत्रित करते हैं, कभी वैकल्पिक विचारधारा को पनपने नहीं दिया। वे इतने असहिष्णु हैं कि दूसरी विचारधारा को बर्दाश्त नहीं करते। दादरी में जो घटना हुई वह दुर्भाग्यपूर्ण और निंदनीय है। दोषियों को सजा मिलेगी। इस तरह के अपवाद को छोड़ दें तो भारत बेहद सहिष्णु और उदार समाज है। हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में सह-अस्तित्व समाहित है। भारत ने बारंबार असहिष्णुता को खारिज किया है। यह भड़काऊ कोशिशों के झांसे में नहीं आता। इसलिए भारत तथा मौजूदा सरकार के शुभचिंतकों की जिम्मेदारी है कि वे अपने किसी भी कृत्यक या वक्तव्य से उन लोगों को कोई मौका न दें जो भारत के विकास में बाधा डालना चाहते हैं। बाधा डालने वालों की सीधी योजना है- अगर वे राजनीतिक तौर पर नहीं लड़ सकते तो वे दुष्प्रचार करेंगे। ■

(लेखक केंद्रीय वित्त एवं सूचना प्रसारण मंत्री हैं।)

मुद्दा : सम्मान वापसी

मोदी विरोधी कर रहे हैं भारत को बदनाम

– एम. वेंकय्या नायडु

क्या भारत उदार देश है या नहीं, इस पर बहुत बड़ा विवाद उठाया जा रहा है। हमारी सभ्यता की प्रमुख प्रकृति यह है कि इसमें अनेक समुदायों, दर्शनों और वैश्विक विचारों की एकता है।

हमारा देश हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिक्ख धर्म चार प्रधान वैश्विक धर्मों का जन्मस्थान है। यदि हमारी सभ्यता की प्रधान प्रवृत्तियाँ सहिष्णुता और उदारता नहीं हुई होतीं तो यह संभव नहीं हुआ होता।

अब यह प्रचारित किया जा रहा है कि यह सहिष्णुता नष्ट होती जा रही है। यदि यह सत्य है तो इसके उत्तरदायी कौन हैं? स्वतंत्रता के पश्चात किसने हमारे देश का शासन संभाला था? स्वतंत्रता के पश्चात् लगभग 60 वर्षों तक कांग्रेस सत्ता में रही है और वह भी अधिकांश राज्यों में।

जो सहिष्णुता हमारी मातृभूमि की प्रवृत्तियों में आनुवंशिक रूप से गहरे ढंग से समा गई हो, वह सहिष्णुता क्या मोदी के डेढ़ वर्ष के शासन में नष्ट की जा सकती है? जो कुछ अभी हो रहा है क्या इसके पहले कांग्रेस के शासन में नहीं हुआ?

कई वर्षों से कांग्रेस के वोट बैंक राजनीति की वजह से उसका आदर्श विषय और उसकी नित्यचर्या सांप्रदायिक हिंसा रहा करती थी और ऐसी घटनाएँ चुनावों के समय अक्सर हुआ करती थीं और उसके लिए यह आदर्श हुआ करता था।

जब हमारी अर्थव्यवस्था पुनर्जीवित होती जा रही है और हमारे देश का आदर बढ़ता जा रहा है तथा उसकी पहचान बढ़ती जा रही है एवं अंतर्राष्ट्रीय निवेशक हमारे देश में आ रहे हैं और संगठनों की पक्तियाँ भारत के रैंकिग को उच्चतर बनाती जा रही हैं तथा भारत के प्रधानमंत्री पूरे भारत और विश्वभर में प्रशंसा के पात्र बनते जा रहे हैं, तब प्रधानमंत्री और सरकार की बढ़ती हुई लोकप्रियता को हमारे कुछ राजनीतिक विरोधी हजम नहीं कर पा रहे हैं। वे चीजों को असंतुलित बनाने की चेष्टा कर रहे हैं। वे राज्यों की निष्क्रियता के लिए केंद्र सरकार को दोष दे रहे हैं। दादरी की घटना समाजवादी पार्टी शासित उत्तर प्रदेश में घटी। श्री कुलबुर्गी की हत्या कांग्रेस शासित कर्नाटक राज्य में हुई। और तो और श्री दाबोलकर की हत्या भी महाराष्ट्र में कांग्रेस के शासन काल में हुई। किंतु हमारे प्रतिपक्षी केंद्र को दोषी ठहरा रहे हैं।

जब हमारी अर्थव्यवस्था पुनर्जीवित होती जा रही है और हमारे देश का आदर बढ़ता जा रहा है तथा उसकी पहचान बढ़ती जा रही है एवं अंतर्राष्ट्रीय निवेशक हमारे देश में आ रहे हैं और संगठनों की पक्तियाँ भारत के रैंकिग को उच्चतर बनाती जा रही हैं तथा भारत के प्रधानमंत्री पूरे भारत और विश्वभर में प्रशंसा के पात्र बनते जा रहे हैं, तब प्रधानमंत्री और सरकार की बढ़ती हुई लोकप्रियता को हमारे कुछ राजनीतिक विरोधी हजम नहीं कर पा रहे हैं।

लेखक सृजनात्मक व्यक्ति होते हैं जिनकी रचनाओं में समुदायों का सामाजिक-आर्थिक विकास प्रतिबिंबित होता है। वे इन मूलभूत यथार्थों का अंतर समझकर इनकी निष्पक्ष व्याख्या करते हैं। इनमें यदि कोई अपसरण हों तो इनकी आलोचना करने का उनको पूरा अधिकार है। यह उनका अधिकार क्षेत्र है।

दादरी और कुलबुर्गी की घटनाओं के बाद उनमें से कुछ लोगों ने उनको प्रदान किए गए साहित्य अकादमी पुरस्कार वापस करने का निर्णय लिया है। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन मुझे इस विषय में आपत्ति है यदि वे कहे कि ये सभी घटनाएँ केंद्र में भारतीय जनता पार्टी के सत्ता में होने की वजह से ही घट रही हैं।

नकली धर्मनिरपेक्ष बैंडवेगन को सम्मिलित करते हुए कुछ लेखक, फिल्मनिर्माता, कलाकार, जो देश में अराजक वातावरण फैलाने वाले असत्य अर्थ निकालने पर उतारू हैं। जब कश्मीर के महान और अमर काव्य तथा साहित्य अग्नि को अर्पित किए जा रहे थे तब ये आवाजें कहां थीं? इनमें से कई आवाजें खुली नहीं थीं और इनकी कलमें नहीं चली थीं। आपके सामने घाटी में कश्मीर के बुद्धिजीवी वर्ग के सामूहिक संहार की घटना घटी थी। जिह्वाएँ काट दी गई थीं। ये तथाकथित विद्वत्परिषद्

कार्रवाई करने से चूक गए थे। जब कुलबुर्गी की हत्या की गई, तब उसको हिंदुओं के षड्यत्र का नाम दिया गया लेकिन जब आतंकवादियों ने मुम्बई में विस्फोट किया तब हम सबने जान लिया कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं और कोई वर्ण नहीं। किंतु जब यह कार्रवाई एक हिन्दू द्वारा की जाती है तो तुरत उसको धर्म और वर्ण का आकार और रंग दिया जाता है।

मैं इस विद्वेषपूर्ण प्रचार में स्पष्ट नमूना और बुरी योजना देखता हूँ। जब लाखों और करोड़ों के सार्वजनिक धन को घोटालों की शृंखला द्वारा लूट लिया गया तब ये लोग जड़ बने रहे थे। जब साथी लेखिका तसलीमा पर शारीरिक रूप से आक्रमण किया गया और रूढ़िवादियों द्वारा प्रेस क्लब से जबरदस्ती उसको बाहर भेज दिया गया तब ये लोग चुप क्यों थे? जब श्री ए.आर. रहमान ने प्रवक्ता मोहम्मद पर के फिल्म के संगीत के लिए और फिल्म मजीद मजीदी का मुँह बंद किया गया, तब इन लोगों में से कई लोगों ने अपने मुँह नहीं खोले थे।

इनमे से कई लेखकों ने आपातकाल के अंधेरे मे अपने मुँह नहीं खोले थे। मशहूर समाचार पत्र बंद किए गए और उस समय ये बुद्धिजीवी वर्ग आपातकाल की आवाज लगाते हुए कहते रहे कि सब ठीक है। जब वचनबद्ध न्याय व्यवस्था के लिए न्याय निर्णेताओं का अतिक्रमण किया गया तब भी ये लोग चुप थे। जब विपक्षी नेताओ को जेलों मे डाला गया और जब संविधान को किसी एक व्यक्ति के हित में संशोधित किया गया तब ये लोग मौन समर्थक बने रहे थे। जब हजारों लोगों को जबरदस्ती निर्जीव बना दिया गया तब इन लोगों ने

यह बहुत ही स्पष्ट है कि इस देश की जनता अनुभव करती है कि इनमें से कुछ लोग राजनीतिक ढंग से प्रेरित हैं और मूर्खतापूर्ण ढंग से निर्देशित हैं लेकिन उनके पास राजनीतिक ढंग से उनसे युद्ध करने के लिए पर्याप्त सख्या बल नहीं है। वे केवल राजनीतिक ढंग से प्रेरित और विद्वेषपूर्ण यंत्रागों का समर्थन करने की चेष्टा कर रहे हैं।

अपने मुँह नहीं खोले थे। जब वर्ष 1984 में सिखों का सामूहिक हत्याकांड हुआ तब इन बुद्धिजीवियों मे कई लोग मौन रहे थे। तब इस कांग्रेस नेतृत्व ने इस सामूहिक हत्याकांड को न्यायोचित ठहराते हुए कहा कि जब बहुत बड़ा बरगद का पेड़ गिरता है तब भूमि कंपित होती है। लोगों के मूल अधिकारों और भारत के संविधान पर आपातकाल एक बहुत बड़ा नृशंस आक्रमण था। उस समय क्या किसी लेखक ने अपना विरोध जताया या अपने सम्मान या उपाधियाँ वापस की?

कुछ लेखक नरेंद्र मोदी के आविर्भाव को हजम नहीं कर पाए थे। उन्होंने उनके सत्ता में आने के छः महीने के अंदर ही उनको खुले रूप में फासिस्ट कहते हुए उनका खण्डन किया और अवसर की ताक में रहे थे। अब, जबकि कुछ राज्यों में और वह भी अधिकतर कांग्रेस शासित राज्यों और उनके मित्रों द्वारा शासित राज्यों में कुछ अक्षम्य घटनाएँ घटीं तो उसका लाभ उठाते हुए प्रधानमंत्री और इस देश को बदनाम कर रहे हैं। उनमें से कुछ लोग वाराणसी में गए और लोकसभा के चुनावों के दौरान मोदी के विरुद्ध प्रचार भी किया।

जैसा कि सामाजिक कार्यकर्ता और स्तम्भ लेखक आगरा के सैयद इख्तियार जाफरी ने कहा कि यदि देश के प्रत्येक अपराध के लिए प्रधानमंत्री को संबोधित किया जाना था तो राज्य सरकारों, जिनसे अपने संबंधित राज्यों में कानून और व्यवस्था के लिए उत्तरदायी रहने की आशा की जाती है, से क्या प्रयोजन था?

यह बहुत ही स्पष्ट है कि इस देश की जनता अनुभव करती है कि इनमें से कुछ लोग राजनीतिक ढंग से प्रेरित हैं और मूर्खतापूर्ण ढंग से निर्देशित हैं लेकिन उनके पास राजनीतिक ढंग से उनसे युद्ध करने के लिए पर्याप्त सख्या बल नहीं है। वे केवल राजनीतिक ढंग से प्रेरित और विद्वेषपूर्ण यंत्रागों का समर्थन करने की चेष्टा कर रहे हैं। इनमें से कुछ लोगो ने दाबोलकर की हत्या का खंडन नहीं किया, कुलबुर्गी की हत्या का भी नहीं किया, लेकिन अचानक केंद्र सरकार और उसके द्वारा इस देश को बदनाम करने के लिए वाद्यवृंदों की प्रणालीबद्ध प्रचार करने लगे हैं। और यह समयानुकूल क्या बिहार के चुनावों की वजह से है?

कानपुर जिले के मोकरी गाँव के अध्यापक के टी. जयकृष्णन को क्लास रूम मे घुसकर दिन दहाड़े मौत के घाट उतारने की घटना सहित आर.एस.एस., ए.बी.वी.पी. और केरल के अन्य भाजपा कार्यकर्ताओं के विरुद्ध वामदल के मार्क्सवादियों द्वारा किए गए अत्याचारों का जनता को स्मरण दिलाएँ। इनमें से किसी ने अपनी आवाज भी नहीं उठाई

जब नक्सलियों ने हजारों निर्दोष जनता की हत्या की थी और खुले तौर पर उन्होंने स्वयं को ही उस घटना के उत्तरदायी के रूप में घोषणा की थी। इन लोगों में से किसी को भी पीड़ितों के जीवन की स्वतंत्रता के प्रति सहानुभूति नहीं थी।

वे मौन रहे क्योंकि उनको मालूम था कि यदि वे अपना मुँह खोलेंगे तो माओवादी हिंसक हो जाएँगे।

इन नकली धर्मनिरपेक्षवादियों, वामदल के बुद्धिजीवियों और परिवार समर्थकों, जिनकी अच्छी मोर्चाबंदी विविध संस्थानों, सरकारी सगठनों में रही, और जिन्होंने वर्षों के कांग्रेस शासन में सरकारी हित पाये हैं, (उनके प्रयत्नों द्वारा) (निवारण न करते हुए) हम विकासात्मक कार्यसूची पर लगातार आगे बढेंगे।

यदि किसी प्रधानमंत्री को ऐसी घटनाओं के घटने के हर समय पर अपनी प्रतिक्रिया जतानी हो तो उनको कानून और व्यवस्था संभालने में सबंधित राज्य सरकारों की असफलता का जिक्र भी करना पड़ता है। क्या यह राजनीतिक रूप से सही और स्वीकार्य होगा?

प्रधानमंत्री से उनके विचार व्यक्त करने की अपेक्षा करने से पहले, राज्य सरकारों के लिए यह अत्यंत आवश्यक था कि वे अपने राज्यों में हिंसा को नियंत्रण करने मे अपनी असमर्थता पर अपने विचार व्यक्त करें। यदि राज्य हिंसा का नियंत्रण करने मे असफल हो जाए तो तब केंद्र को इसमें हस्तक्षेप करना चाहिए और जिस क्षण केंद्र हस्तक्षेप करता है तब उस पर संघीय प्रणाली के ऊपर अनाधिकार हस्तक्षेप का आरोप लगाया जाता है।

दाभोलकर की हत्या कब और कहां हुई? महाराष्ट्र में और वर्ष 2013 में जब राज्य और केंद्र स्तर दोनों में कांग्रेस सत्ता में थी। इसके लिए क्या काग्रेस को उत्तरदायी नहीं ठहराया जाना चाहिए? उस समय किसी लेखक ने अपने पुरस्कार वापस किए थे?

भाजपा और प्रधानमंत्री के विरुद्ध हो रहे विद्वेषपूर्ण प्रचार के कारणों को कहीं छोड़ दें। स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद से, एक निर्दिष्ट विचारधारा का समर्थन किया जाता रहा है और व्यक्तियों तथा संस्थाओं को एक परिवार के नाम में सहारा दिया जाता रहा है। किसी अन्य वैश्विक दृष्टि या परिप्रेक्ष्य के लिए व्यक्त किए जाने और पनपने का अवसर नहीं दिया गया।

जो लोग पिछले कई वर्षो से इस देश की एक विचारधारा पर विश्वास करते आए है वे अब उभरने वाली नई विचारधारा को आत्मसात करने के लिए तैयार नहीं हैं। जब ऐसे व्यक्ति दूसरों के लिए मार्ग दर्शाएँगे तब उनको रुचिकर नहीं लगेगा। यहाँ मैं हिंदुओं और मुसलमानों की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं केवल उस चाटुकारिता की बात कर रहा हूँ जिसने अन्य योग्य व्यक्तियों के विचारों और संस्थाओं का दमन किया हो।

भारत की जनता समझदार है और मुझे विश्वास है कि वह इस विद्वेषपूर्ण प्रचार को समझेगी और यह देश उनको उचित उत्तर देगा। जनता विकास चाहती है और प्रधानमंत्री ऐसी कोई घटनाएँ घटित होते नहीं देखना चाहते जिनसे सरकार का ध्यान विकास से हट जाए। उन्होंने यह बात कई बार विस्तार से स्पष्ट की है।■

(लेखक शहरी विकास, आवास और शहरी गरीबी उन्मूलन और संसदीय मामलों के केन्द्रीय मंत्री हैं)

~~~~~~~~~~☯☯☯~~~~~~~~~~

चीन के उपराष्ट्रपति श्री ली युवानचाओ ने प्रधानमंत्री से मुलाकात की

चीन के उपराष्ट्रपति श्री ली युवानचाओ ने 6 नवंबर को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। प्रधानमंत्री ने गर्मजोशीपूर्वक चीन के राष्ट्रपति श्री शी जिनपिंग की पिछले वर्ष भारत की यात्रा एवं उनकी खुद की इस वर्ष मई में चीन की यात्रा का स्मरण किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत एवं चीन के लिए अपने आर्थिक एवं विकासात्मक साझीदारी को आगे बढाने की बेशुमार संभावना है। उन्होंने भारत एवं चीन के बीच सहयोग के लिए रेलवे, स्मार्ट सिटीज, बुनियादी ढांचे एवं शहरी परिवहन में अवसरों को रेखांकित किया।

प्रधानमंत्री ने चीन से भारत में निवेश के बढ़े हुए स्तरों का स्वागत किया और उम्मीद जताई कि भारत का भ्रमण करने वाले चीनी पर्यटकों की संख्या में बढ़ोतरी जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि भारत और चीन के बीच प्राचीन सांस्कृतिक रिश्ते लोगों से लोगों के मजबूत संबंधों की वृद्धि के लिए एक उत्प्रेरक हैं। प्रधानमंत्री एवं श्री ली युवानचाओ ने सहमति जताई कि भारत और चीन के बीच शांतिपूर्ण, सहयोगात्मक एवं स्थिर संबंध क्षेत्रीय एवं वैश्विक शांति एवं समृद्धि के लिए अहम हैं। ■
~~~~~~~~~~

मध्यप्रदेश स्थापना दिवस पर विशेष

पं. दीनदयाल के सपनों एवं जनसंघ की ऋचाओं को साकार करते शिवराज सिंह चौहान

– प्रभात झा

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान अपने कार्यकाल के दस वर्ष पूरे कर रहे हैं, जिन्हें पं. दीनदयाल उपाध्याय के सपनों को साकार करने वाले वर्ष भी कहे जा सकते हैं। अंत्योदय उत्थान के इस दस वर्ष में समाजोत्थान के 'एक नहीं अनेक' निर्णय लिए गए। वे राजनीतिक कम सामाजिक व्यक्तित्व अधिक हैं। मुख्यमंत्री के साथ-साथ वे अच्छे कार्यकर्ता भी हैं। सच्चाई यही है कि वे जनसंघ की ऋचाओं की एक-एक पंक्ति को पूरा करने में लगे एक अच्छे कार्यकर्ता हैं।

पांच वर्ष पूर्व 27 नवम्बर 2010 को हमने शिवराजजी के पांच वर्ष पूरे होने पर ''कार्यकर्ता गौरव दिवस'' का आयोजन नम्बरी मैदान पर संपन्न किया गया था। इस कार्यक्रम को देश ने, भाजपा के केन्द्रीय नेतृत्व ने सराहा। मुझे भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के नाते उस समय लगा कि किसी भी राजनैतिक दल की सबसे बड़ी पूंजी 'कार्यकर्ता' ही होता है। कार्यकर्ता की मेहनत ही रंग लाती है। जनता के बीच संगठन का सेतु कार्यकर्ता ही है। वही ऐसा है जो दल को, दल के सिद्धांत को और दल के नेता को जनता के बीच ले जाता है। अत: हमने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का सम्मान भी बतौर आदर्श कार्यकर्ता रखने का प्रयास किया। हमारा प्रयास रहा कि ''आदर्श कार्यकर्ता'' का सदैव सम्मान होते रहना चाहिए।

मैं व्यक्तिगत तौर पर शिवराज सिंहजी को गत 32 वर्षों से जानता हूं। वे कार्यकर्ता की साधना और विचारधारा की तपस्या सदैव करते रहते हैं। यही कारण है कि उन्होंने गत दस वर्षों भाजपा को गांव-गांव ले गए। प्रदेश की जनता ने उन्हें जननायक बनाया तो उन्होंने भी यह प्रयास किया कि वे जनता की सेवा बतौर मुख्यमंत्री नहीं, बल्कि मुख्यसेवक के रूप में करते हैं। राजनैतिक जीवन में राजनीति के बजाए लोग पाखंड करते हैं, लेकिन मेरे मित्र शिवराज सिंह चौहान कभी पाखंड नहीं करते। उनका प्रयास रहता है कि वे करुणा के सागर में सदैव गोता लगाते रहे। उनकी करुणा का एक अनोखा उदाहरण है कि आज मध्यप्रदेश में कोई भी धन के अभाव में इलाज से वंचित नहीं हो सकता। इलाज के लिए आर्थिक मदद की चर्चाएं पूरे भारत वर्ष में है। मध्य प्रदेश के नागरिकों को यह भरोसा दिलाया गया कि सरकार आपके जिंदगी से जुड़ी है। जनता की जिंदगी से बढ़कर भाजपा सरकार के लिए और कुछ भी नहीं।

इतना ही नहीं, बेटी आपकी, चिंता शिवराज सरकार की। यह नारा नहीं, बल्कि इसको साकार करने की दिशा में मध्यप्रदेश ने एक नहीं अनेक योजनाओं को जमीन पर उतारने का काम किया है। अभिशाप समझी जाने वाली बेटी को वरदान बनाने की दिशा में मध्यप्रदेश में आज जो भी कदम उठाया गया, वो शिवराजजी की भाजपा सरकार ने उठाया है।

बतौर मुख्यमंत्री अनेक लोगों ने मध्यप्रदेश की सेवा की, पर समाज के छोटी-छोटी कठिनाईयों को समझकर उसका निदान करने का सर्वोत्तम प्रयास मुख्यमंत्री शिवराज जी ने किया।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान अपने कार्यकाल के दस वर्ष पूरे कर रहे हैं, जिन्हें पं. दीनदयाल उपाध्याय के सपनों को साकार करने वाले वर्ष भी कहे जा सकते हैं। अंत्योदय उत्थान के इस दस वर्ष में समाजोत्थान के 'एक नहीं अनेक' निर्णय लिए गए।

एक लेख में, अनुभवों को बांधा नहीं जा सकता। उन्होंने गांव के उस व्यक्ति की चिंता की, जो मुर्गा और बकरी पालता है। गांव में यदि किसी ग्रामीण की मुर्गी मर जाती है या बकरी मर जाती है, तो उसे मध्यप्रदेश सरकार राहत राशि देती है। कौन सा प्रदेश है देश में जहां इस स्तर पर ग्रामीणों की चिंता की जाती हो।

ग्राम के दु:ख-दर्द पर शिवराजजी जैसे पीएचडी किया हो। जच्चा-बच्चा की चिंता करने की दिशा में शिवराज सिंह के शासकीय फैसले आज भी गांवों

को खड़ा कर रहा है। शिवराज सिंह चौहान सामाजिक व्यवहार के पुरोधा है। उन्होंने समाज की ग्रामीण समस्याओं को बहुत करीब से देखा है, यही कारण है कि उन्होंने मध्यप्रदेश को अंधेरे से उजाले की दिशा में ले जाने का जो असीम प्रयास किया है, उसका एहसास प्रत्येक मध्यप्रदेश का नागरिक कर रहा है। ये सदैव सोचते रहते हैं। मेरे मध्यप्रदेश का विकास कैसे हो। उन पर मध्यप्रदेश के विकास का जुनून सवार है। वे चाहते है कि भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता पर यह जुनून सवार रहे। वे अकेला चलो के बजाए सामूहिकता में विश्वास रखने का प्रयास जारी रखते हैं। उनकी सरकारी योजनाओं का जन्म आम नागरिकों के पंचायत से होता है।

श्री शिवराज सिंह चौहान मूल में जो मैंने देखा है, वे एक धार्मिक प्रवृत्ति के संवेदनशील समाजसेवी हैं। सबसे अच्छी बात है कि वे विरोधियों को भी अवसर देते हैं। उनकी राजनैतिक जीवन में ऐसे अनेक अवसर आए, जब विरोधियों ने चाहे जो आरोप लगाए, पर उन्होंने धैर्य का धर्म नहीं छोड़ा बल्कि ऐसे लोगों के सकारात्मक गुणों का उपयोग संगठन और सरकार के लिए सदैव लेने का प्रयास किया। उन्होंने कार्यकर्ताओं का विस्तार किया और कार्यकर्ता का गांव-गांव में निर्माण किया।

गत दस वर्षों में सत्ता के शीर्ष पर रहने के बाद भी अहम से दूर रहना, यह ईश्वर की असीम कृपा है। वे घमंड और पाखंड से दूर रहे हैं। 'सामाजिक सौहार्द्रता' उनका मूल स्वभाव है। वे बहुत मेहनती है। दिन भर सचिवालय में, पर शाम और रात सड़कों पर जनता के बीच पहुंचना सामान्य घटना नहीं है।

शिवराजजी की स्थिति यह है कि वे सत्ता में रहते हुए कभी भी संगठन के किसी कार्य से अपने को कभी दूर नहीं रखा। उन्होंने प्रत्येक मध्यप्रदेशवासियों के भीतर स्वाभिमान जगाने के लिए मध्यप्रदेश में मध्यप्रदेश गान की शुरुआत की, जो इस स्वरूप को दर्शाता है, जिसमें मध्यप्रदेश का विकास मात्र उनका लक्ष्य है।

मैंने पूर्व में लिखा मध्यप्रदेश में जितनी योजनाओं को मूर्त रूप दिया गया है उसमें राजनीति नहीं, बल्कि सामाजिकता अधिक है। वे अपने व्यवहार से सिर्फ भाजपा के मुख्यमंत्री नहीं, बल्कि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं। वे दल के कार्यकर्ता अवश्य हैं, पर वे उससे पहले प्रदेश के प्रथम सेवक हैं।

मध्यप्रदेश का गठन एक नवम्बर को होता है। शिवराज जी ने मध्यप्रदेश के गठन दिवस को मनाने की प्रेरणा गांव-गांव से ली।

शिवराज सिंह चौहान को कोई भी निकट से देखेगा तो सहसा कह उठेगा कि वे सामाजिक व्यवहार के धनी है। वे राजनैतिक रूप से दूरदृष्टि के धनी हैं। जनता के मन को समझने की असीम क्षमता है। अगर यह कहा जाए कि उन्होंने मध्यप्रदेश को एक नई दिशा दी है और दशा भी बदली है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनकी कुशलता की कामना हर वो गरीब करता है, जिसकी गरीबी निरंतर दूर हो रही है। सच में वे गरीबों के तारणहार हैं।

मध्यप्रदेश के राजनैतिक इतिहास वाले आज जब इतिहास लिखेंगे तो उन्हें लिखना ही पड़ेगा कि मध्यप्रदेश में दस वर्षों से भी अधिक मुख्यमंत्री रहने वाले प्रथम व्यक्ति का नाम शिवराज सिंह चौहान है। वे आगे भी भाजपा का और मध्यप्रदेश का नेतृत्व करते रहें, यही ईश्वर से प्रार्थना है। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं राज्यसभा सदस्य हैं।)

विश्व की 10 सबसे ताकतवर हस्तियों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी विश्व के नवें सबसे ताकतवर व्यक्ति हैं। मशहूर अंतरराष्ट्रीय पत्रिका फोर्ब्स ने 2015 में दुनियाभर के ताकतवर हस्तियों की सूची जारी की है। विश्व के सबसे शक्तिशाली व्यक्तियों की सूची में रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमिर पुतिन शीर्ष पर हैं। फोर्ब्स ने 73 सर्वाधिक प्रभावशाली लोगों की 4 नवंबर को एक सूची जारी की जिसमें रिलायंस इंडस्ट्री के अध्यक्ष मुकेश अंबानी 36 वें, आर्सेलर मित्तल के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी लक्ष्मी मित्तल 55वें पर और माइक्रोसॉफ्ट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सत्य नडेला 61वें स्थान पर हैं। फोर्ब्स ने कहा कि भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री के कार्यकाल के पहले वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद में 7.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसके बाद अमरीका के राष्ट्रपति बराक ओबामा और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की भारत यात्राओं के वक्त उनकी छवि एक वैश्विक नैता के रूप में उभर कर सामने आई। उनके सिलिकॉन वैली के दौरे ने भारत में आधुनिक तकनीक को व्यापक महत्व दिए जाने को रेखांकित किया। ■

श्रीनगर रैली

'कश्मीरियत, जम्हूरियत और इंसानियत' का अटल स्वप्न पूरा करना है : नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 7 नवंबर को जम्मू और कश्मीर के लिए 80 हजार करोड़ रूपए के पैकेज की घोषणा की। श्रीनगर में शेर-ए-कश्मीर स्टेडियम में अपने संबोधन में श्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के कश्मीरियत, जम्हूरियत, इंसानियत के संदेश का स्मरण किया।

इस अवसर पर जम्मू और कश्मीर के मुख्यमंत्री श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद, केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी और केंद्रीय राज्य मंत्री श्री डॉ. जितेंद्र सिंह भी उपस्थित थे। प्रस्तुत है प्रधानमंत्री के संबोधन का संपादित पाठ :-

भाइयो-बहनों, हमें अटल जी के नक्शे-कदम पर चलना है। कश्मीर के लिए मुझे दुनिया के किसी की आवश्यकता नहीं है। इसी धरती पर, इसी मंच पर अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो बात कही थी, इससे बड़ा कोई संदेश नहीं हो सकता। उन्होंने तीन मंत्र दिए थे- उन्होंने कहा था "कश्मीरियत, जम्हूरियत और इन्सानियत"। मैं आज भी इसी बात को मानता हूं कि कश्मीर के विकास का रास्ता इन तीन आधारों पर खड़ा होना है। इसी को मजबूती देनी है।

जब 'जम्हूरियत' की बात वाजपेयी जी करते थे, क्या कभी किसी ने सोचा था, इतने कम समय में कश्मीर के लोग जम्हूरियत को इतना बल दें और लोकसभा के चुनाव में, विधानसभा के चुनाव में कितना भारी मतदान किया? और आज जब मुफ्ती साहब कह रहे हैं मैं पंचायतों को अधिकार देना चाहता हूं, ये ही तो वो अटल जी वाली जम्हूरियत है। वो ही तो जम्हूरियत है। एक-एक गांव का पंच होगा, पंच के पास अधिकार होगा। वो अपने फैसले कर पाएगा और सरकार उसको हाथ पकड़ करके जो मदद चाहिए, मदद करती रहेगी। हमारा एक-एक गांव कितना ताकतवर बनेगा। ये जम्हूरियत की कसौटी पर वाजपेयी जी ने जो सपना देखा था कश्मीर के लोगों ने पूरा करके दिया है। और इसलिए मैं उस महापुरुषों के शब्दों के लिए आज कश्मीर के मेरे लाखों बहनों-भाईयों को शत-शत नमन करता हूं। मैं उनका अभिनंदन करता हूं, उन्होंने जम्हूरियत को यह ताकत दी है।

भाईयों-बहनों "कश्मीरियत" के बिना हिंदुस्तान अधूरा है सिर्फ कश्मीर ही नहीं। और इसलिए उस कश्मीरियत, जो भारत की आन-बान-शान है, अगर किसी को सच्ची असाम्प्रदायिकता हो तो इसी की धरती से ही तो निकली थी। वो सूफी परंपरा कहां से आई थी? इसी धरती से आई थी, जिसने जोड़ना सिखाया। सम्बन्ध बनाना सिखाया। और वो ही परंपरा, वही तो हमारी कश्मीरियत है।

और दुनिया कितनी ही बदल क्यों न जाए, इंसान आसमान में ताकत बना लें लेकिन "इंसानियत" के बिना कुछ भी आगे नहीं बढ़ सकता है। और इसलिए जिन्दगी कितनी ही आगे क्यों न बढ़े, हमें कहां से कहां पहुंचा दे, आर्थिक प्रभु-सपंदा हमें कितनी ही नई ऊंचाइयों पर क्यों न ले जाए लेकिन इंसानियत का, हमारे भीतर की जो आत्मा है वो ही जीने के लिए, औरों के जीने के लिए, सबके जीने के लिए एक प्रेरणा देता है, ताकत देता है और इसलिए "कश्मीरियत, जम्हूरियत और

इंसानियत" – इसी दायरे को लेकर के हम आगे बढ़ना चाहते हैं।

हमारे सामने सबसे बड़ा काम जो मुझे लगता है, वो है जम्मू कश्मीर और लद्दाख के नौजवानों को रोजगार। हमारी सारी समस्याओं का समाधान हमारे नौजवानों के रोजगार में है।

पिछले कुछ समय से हर वर्ष कश्मीर के नौजवान सिविल सेवा में उत्तम प्रदर्शन करते हैं और आईएएस, आईपीएस कैडर में आ रहे हैं, आईआईटी में दिखते हैं, आईआईएम में दिखते हैं। ये ताकत कश्मीर के नौजवान में है जिसे मैं भली-भांति पहचानता हूं।

अब पर्यटन में आज जो हमारी व्यवस्था है, इसको अगर हम आधुनिक नहीं बनाते, हमारा आधारभूत संरचना ठीक नहीं करते तो पर्यटन बढ़ नहीं सकता है। आज हिन्दुस्तान से करीब पौने दो करोड़ लोग – और वो कोई अमीर घराने के नहीं है, मध्यम वर्ग, उच्च मध्यम वर्ग के हैं – वे वैकेशन में पांच दिन, सात दिन के लिए विदेश चले जाते हैं भ्रमण करने के लिए। भले ही दुबई जाते होगे, लेकिन जाते हैं विदेश। क्या हम कोशिश नहीं कर सकते हैं कि हिन्दुस्तान के पौने दो करोड़ लोग जो बाहर जाते हैं कम से कम पांच प्रतिशत, ये तो तत्काल मेरे कश्मीर में लौट आए? आप देखिए, यहां का पर्यटन कितना बढ़ जाएगा। आज विदेश के टूरिस्ट 40-50 हजार के आसपास रहते हैं। विदेश के टूरिस्ट पांच लाख कैसे बनेंगे? 12 महीने यहां पर एडवैन्चर एण्ड टूरिज्म के लिए स्कोप है, यहां ईको एण्ड टूरिज्म के लिए स्कोप है। यहां पर सैर करने के लिए शौक से आने वाले लोगों के लिए पर्यटन का अवकाश है।

हम आधारभूत संरचना को बल देना चाहते हैं। अगर आज जम्मू से श्रीनगर आना है और 9 घंटे, 10 घंटे, 11 घंटे लग जाते हैं तो पर्यटक भी 50 बार सोचेगा कि यार क्या जाऊंगा, बात नहीं बनती है। हमारे नितिन जी के नेतृत्व में जम्मू से श्रीनगर का रास्ता और हमारी कोशिश है कि आने वाले ढ़ाई साल के भीतर-भीतर हम ये काम पूरा कर दे। 34,000 करोड़ रुपया जम्मू-श्रीनगर का एक नया हम जो मार्ग दे रहे हैं उस पर लगा रहे हैं और उसके कारण जम्मू से श्रीनगर आने में आज 9 घंटे, 10 घंटे, 12 घंटे लग जाते हैं वो साढ़े तीन-चार घंटे में पहुंच पाएगा और सुरंग बनाने के कारण करीब 65-70 किलोमीटर रास्ता कम हो जाएगा।

भारत सरकार ने जम्मू कश्मीर के लिए 80 हजार करोड़ रुपये का पैकेज देने की घोषणा की है। मेरे नौजवानों मेरी दिली इच्छा है ये 80 हजार करोड़ रुपया आपके भाग्य को बदलने के लिए काम आना चाहिए।

आप कल्पना कर सकते हैं कि विकास को कितनी नई ऊंचाइयां मिल सकती है। हम रेल ट्रेक और बलवान बनाना चाहते हैं। मुफ्ती साहब ने कहा, चीन में बन सकता है, यहां क्यों नहीं। बन सकता है, कश्मीर की धरती पर भी बन सकता है। और इसलिए मेरे भाईयों बहनों, बिजली हो, पानी हो, सड़क हो, साथ-साथ अब सिर्फ हाईवे से चलने वाला नहीं है। हाईवे की एक जरूरत है उसके बिना चलना नहीं है, लेकिन सिर्फ हाईवे से भी नहीं चलना है। और इसलिए आईएण्डवेज की भी जरूरत है। और इसलिए हमारा लक्ष्य हाईवेज का भी है, आईएण्डवेज का भी है। इंफार्मेशन वेज, फाइवर नेटवर्क तथा डिजिटल नेटवर्क विश्व के साथ जुड़ने के लिए हमारे मोबाइल फोन पर दुनिया हो, वो नेटवर्क कश्मीर की धरती पर मिलना चाहिए।

उसी प्रकार से बुर्जगों के लिए, बीमारी हो, अच्छे दवाखानों का नेटवर्क हो, दवाईयां उपलब्ध हो, हमारे अस्पताल बनें, छोटी जरूरत हो छोटा, बड़े की जरूरत हो बड़ा बने। चाहे जम्मू हो, चाहे लद्दाख हो, चाहे श्रीनगर हो हमने आधुनिक एम्स अस्पताल उसको बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, जिसका लाभ जम्मू को भी मिलेगा, श्रीनगर को भी मिलेगा। हम आईआईटी शुरू करना चाहते हैं, आईआईएम शुरू करना चाहते हैं, ताकि हमारे नौजवान को उत्तम से उत्तम शिक्षा मिले और सस्ते से सस्ती शिक्षा मिले। यह उत्तम से उत्तम शिक्षा और सस्ते से सस्ती शिक्षा और वो भी ग्लोबल लेवल की। अब हरेक के नसीब में इसे ऊंचाईयों तक जाना तो संभव नहीं होता। छोटे परिवार के छोटे लोग भी होते हैं। उनको क्या किया जाए?

भारत सरकार ने जम्मू कश्मीर के लिए 80 हजार करोड़ रुपये का पैकेज देने की घोषणा की है। मेरे नौजवानों मेरी दिली इच्छा है ये 80 हजार करोड़ रुपया आपके भाग्य को बदलने के लिए काम आना चाहिए। ■

बिहार विधान सभा चुनाव 2015

राजद, जदयू और कांग्रेस के महागठबंधन को मिली जीत

वोटों की हिस्सेदारी में भाजपा सबसे आगे

गत 8 नवंबर को बिहार विधान सभा चुनाव, 2015 के परिणाम घोषित कर दिए गए। इस चुनाव में राजद, जदयू और कांग्रेस के महागठबंधन को जीत मिली है। विधान सभा की कुल 243 सीटों में राष्ट्रीय जनता दल को 80, जनता दल यूनाइटेड को 71, कांग्रेस को 27, भाजपा को 53 सीटें मिली हैं। वहीं वामपंथी दलों को तीन तो लोकजनशक्ति पार्टी और राष्ट्रीय लोक समता पार्टी को दो-दो सीटें मिली हैं। हम पार्टी को एक सीट मिली हैं। निर्दलीय उम्मीदवार चार जगह जीते हैं। गौरतलब है कि बिहार विधान सभा चुनाव 2015 पांच चरणों-12 ,16, 21, 28 अक्टूबर और 1, 5 नवंबर को संपन्न हुए। इस चुनाव में 6.68 करोड़ मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। इन 243 सीटों में से 38 अनुसूचित जाति और दो अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है। पिछले विधानसभा चुनाव में 5.51 करोड़ मतदाताओं ने वोट डाले थे।

भले ही बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजों में भाजपा तीसरे नंबर पर रही, लेकिन वोटों की हिस्सेदारी में भाजपा सबसे आगे रही। एक पार्टी के तौर पर भाजपा को सबसे ज्यादा 24.4 फीसदी वोट मिले। सबसे ज्यादा सीटें जीतने वाली लालू की पार्टी आरजेडी 18.4 फीसदी के साथ वोट शेयर में दूसरे और जेडीयू 16.8 फीसदी के साथ तीसरे पायदान पर रही। वैसे गठबंधन के तौर पर महागठबंधन सबसे आगे रहा।

महागठबंधन को लगभग 41.9 फीसदी वोट मिले, जबकि एनडीए की हिस्सेदारी 34 फीसदी रही। भाजपा की सहयोगी लोक जन शक्ति पार्टी और हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा की वोट हिस्सेदारी क्रमश: 4.8 और 2.2 फीसदी रही। जबकि कांग्रेस की वोटों की हिस्सेदारी 6.7 फीसदी ही रही।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने फोन कर बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार को विधानसभा चुनाव में महागठबंधन की जीत के लिए बधाई दी। श्री मोदी ने ट्वीट किया, नीतीश के साथ टेलीफोन पर बात की। जीत पर उन्हें बधाई दी। भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह ने राज्य के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार और आरजेडी प्रमुख श्री लालू प्रसाद यादव को उनकी विजय के लिए बधाई दी और कहा कि उनका दल जनादेश का सम्मान करता है।

श्री अमित शाह ने कहा कि बिहार को विकास के पथ पर ले जाने के लिए हमारी शुभकामनाएं नई सरकार के साथ हैं। भाजपा प्रमुख ने ट्वीट किया, 'हम बिहार के लोगों के जनादेश का सम्मान करते हैं... मैं नीतीश कुमार और लालू प्रसाद यादव को बिहार विधानसभा चुनाव में विजय के लिए बधाई देता हूं।'

भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री सुशील कुमार मोदी ने बिहार विधानसभा चुनाव में सत्ताधारी महागठबंधन की जीत पर मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार और राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष श्री लालू प्रसाद को बधाई दी। श्री सुशील मोदी ने ट्वीट कर कहा, 'महागठबंधन की जीत पर नीतीश कुमार और लालू प्रसाद को बधाई। जनादेश का सम्मान करते हैं।'

दल का नाम	विजयी
इंडियन नेशनल कांग्रेस	27
भारतीय जनता पार्टी	53
जनता दल (यूनाइटेड)	71
राष्ट्रीय जनता दल	80
राष्ट्रीय लोक समता पार्टी	2
लोक जन शक्ति पार्टी	2
कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सिसिस्ट-लेनिनिस्ट)	3
हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर)	1
निर्दलीय	4
कुल	**243**

सरकार की उपलब्धियां

देश के प्रमुख कोर उद्योगों का बेहतर प्रदर्शन

आठ कोर उद्योगों का संयुक्त सूचकांक सितम्बर 2015 में 166.8 अंक रहा, जो सितम्बर 2014 में दर्ज किए गए सूचकांक के मुकाबले 3.2 प्रतिशत ज्यादा है। वहीं, वर्ष 2015-16 की अप्रैल-सितम्बर अवधि के दौरान आठ कोर उद्योगों की उत्पादन वृद्धि दर 2.3 प्रतिशत रही। औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में आठ कोर उद्योगों का भारांक (वेटेज) तकरीबन 38 प्रतिशत है।

कोयला

सितम्बर 2015 में कोयला उत्पादन (भारांक: 4.38 प्रतिशत) ने सितम्बर 2014 के मुकाबले 1.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्शाई। अप्रैल-सितम्बर, 2015-16 में कोयला उत्पादन की वृद्धि दर पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 4.2 प्रतिशत रही।

कच्चा तेल

सितम्बर 2015 के दौरान कच्चे तेल का उत्पादन (भारांक: 5.22 प्रतिशत) सितम्बर 2014 की तुलना में 0.1 प्रतिशत घट गया। अप्रैल-सितम्बर, 2015-16 में कच्चे तेल का उत्पादन बीते वित्त वर्ष की समान अवधि की तुलना में 0.4 प्रतिशत ज्यादा रहा।

प्राकृतिक गैस

सितम्बर 2015 में प्राकृतिक गैस का उत्पादन (भारांक: 1.71 प्रतिशत) सितम्बर 2014 के मुकाबले 0.9 प्रतिशत ज्यादा रहा। अप्रैल-सितम्बर, 2015-16 में प्राकृतिक गैस का उत्पादन पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि की तुलना में 2.1 प्रतिशत घट गया।

रिफाइनरी उत्पाद (कच्चे तेल के उत्पादन का 93 प्रतिशत)

पेट्रोलियम रिफाइनरी उत्पादों का उत्पादन (भारांक: 5.94 प्रतिशत) सितम्बर 2015 में 0.5 प्रतिशत बढ़ गया। अप्रैल-सितम्बर, 2015-16 में पेट्रोलियम रिफाइनरी उत्पादों का उत्पादन पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि की तुलना में 3.6 प्रतिशत अधिक रहा।

उर्वरक

सितम्बर 2015 के दौरान उर्वरक उत्पादन (भारांक: 1.25 प्रतिशत) 18.1 प्रतिशत बढ़ गया। अप्रैल-सितम्बर 2015-16 में उर्वरक उत्पादन बीते वित्त वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 8.0 प्रतिशत ज्यादा रहा।

इस्पात (अयस्क- गैर-अयस्क)

सितम्बर 2015 में इस्पात उत्पादन (भारांक: 6.68 प्रतिशत) 2.5 प्रतिशत घट गया। हालांकि, अप्रैल-सितम्बर, 2015-16 में इस्पात उत्पादन पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के मुकाबले 0.4 प्रतिशत कम रहा।

सीमेंट

सितम्बर 2015 के दौरान सीमेंट उत्पादन (भारांक: 2.41 प्रतिशत) 1.5 प्रतिशत कम रहा। अप्रैल-सितम्बर, 2015-16 के दौरान सीमेंट उत्पादन बीते वित्त वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 1.3 प्रतिशत ज्यादा रहा।

बिजली

सितम्बर 2015 के दौरान बिजली उत्पादन (भारांक: 10.32 प्रतिशत) में 10.8 प्रतिशत का इजाफा हुआ। अप्रैल-सितम्बर, 2015-16 में बिजली उत्पादन पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के मुकाबले 4.1 प्रतिशत ज्यादा रहा।

(गौरतलब है कि ये आंकड़े अंतरिम हैं। कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद, इस्पात, सीमेंट और बिजली के संदर्भ में पिछले वर्ष की समान अवधि के लिए प्राप्त संशोधित आंकड़ों के आधार पर संशोधन किया गया है। तदनुसार, सितम्बर 2014 के लिए सूचकांकों को संशोधित किया गया है।)

आठ कोर उद्योगों की विकास दर
आधार वर्ष: 2004-05=100
विकास दरें (प्रतिशत में)

क्षेत्र	कोयला	कच्चा तेल	प्राकृतिक गैस	रिफाइनरी उत्पाद	उर्वरक	इस्पात	सीमेंट	बिजली	समग्र सूचकांक
भारांक	4.379	5.216	1.708	5.939	1.254	6.684	2.406	10.316	37.903
सितम्बर -14	7.6	-1.1	-5.8	-2.6	-11.6	6.6	3.7	3.9	2.6
अक्टूबर -14	16.2	1.0	-4.2	4.2	-7.0	2.3	-1.0	13.2	6.3
नवम्बर -14	14.5	-0.1	-2.9	8.1	-2.8	1.3	11.3	10.2	6.7
दिसम्बर -14	7.5	-1.4	-3.5	6.1	-1.6	-2.4	3.8	3.7	2.4
जनवरी -15	1.7	-2.3	-6.6	4.7	7.1	1.6	0.5	2.7	1.8
फरवरी -15	11.6	-1.9	-8.1	-1.0	-0.4	-4.4	2.7	5.2	1.4
मार्च -15	6.0	1.7	-1.5	-1.3	5.2	-4.4	-4.2	1.7	-0.1
अप्रैल -15	7.9	-2.7	-3.6	-2.9	0.0	0.6	-2.4	-1.1	-0.4
मई -15	7.8	0.8	-3.1	7.9	1.3	2.6	2.6	5.5	4.4
जून -15	6.3	-0.7	-5.9	7.5	5.8	4.9	2.6	0.2	3.0
जुलाई -15	0.3	-0.4	-4.4	2.9	8.6	-2.6	1.3	3.5	1.1
अगस्त -15	0.4	5.6	3.7	5.8	12.59	-5.9	5.4	5.6	2.6
सितम्बर -15	1.9	-0.1	0.9	0.5	18.1	-2.5	-1.5	10.8	3.2

93 प्रतिशत वयस्कों को मिला 'आधार' पहचान पत्र

भारत में अभी तक 93 प्रतिशत वयस्कों को 'आधार' पहचान पत्र जारी किया जा चुका है। अब सार्वभौमिक आधार कवरेज प्राप्त करने के लिए यूआईडीएआई अब शेष व्यक्तियों को आधार से जोड़ने के अलावा बाल नामांकन पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। यूआईडीएआई ने अपनी पहली आधार संख्या 29 सितंबर 2010 को जारी की थी और तब से पांच सालों के अंदर यह 92.68 करोड़ से अधिक आधार नामांकन जारी कर चुका है। यह सफलता, विशिष्ट पहचान के साथ खुद को सशक्त करने के लिए लोगों की स्वैच्छिक इच्छा के कारण संभव हो पाया है जो कि कहीं भी ले जाने लायक सुगम है और डिजिटल मंच पर कभी भी और कहीं भी ऑनलाइन अधिप्रमाणित करने योग्य है। यह बिलकुल स्थापित हो चुका है कि कोई भी किसी के भी आधार स्थापित पहचान को झूठा साबित नहीं कर सकता है। इसलिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के तहत प्रत्यक्ष लाभ का लक्षित वितरण, सामाजिक और वित्तीय समावेशन के लिए आधार के एक रणनीतिक और नीतिगत उपकरण के तौर पर अपनाने से, एक सपने के सच हो जाने जैसा है। इससे सुविधा में वृद्धि और परेशानी मुक्त जन-केंद्रित शासन को बढ़ावा मिला है।

24 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में जहां यूआईडीएआई को आधार नामांकन जारी करने के लिए अधिकृत कर दिया गया है, पाया गया है कि इनमें से 16 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में विशिष्ट पहचान की वयस्क आबादी संतृप्ति 100 प्रतिशत जिसमें दिल्ली 128 प्रतिशत के साथ पहले स्थान पर, हिमाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना 111 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर, पंजाब (110 प्रतिशत), केरल और हरियाणा (109 प्रतिशत), चंडीगढ़ और सिक्किम (107 प्रतिशत), झारखंड गोवा और पुडुचेरी (106 प्रतिशत), त्रिपुरा (105 प्रतिशत), राजस्थान (103 प्रतिशत), छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र (101 प्रतिशत) है। 5 राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों में वयस्क आधार पहचान संतृप्ति 90 प्रतिशत से अधिक है जिनमें अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (97 प्रतिशत), कर्नाटक और मध्य प्रदेश (96 प्रतिशत), उत्तराखंड (93 प्रतिशत) और उत्तर प्रदेश (91 प्रतिशत) तथा तीन राज्यों में वयस्क आधार पहचान संतृप्ति 80 प्रतिशत से उपर है जिनमें गुजरात (89 प्रतिशत), दमन एवं दियू में (82 प्रतिशत) और बिहार में (80 प्रतिशत) है। सभी राज्यों में कुल मिलाकर जहां विशिष्ट पहचान का कार्य निर्दिष्ट है, वयस्क जनसंख्या के बीच आधार संतृप्ति 98 प्रतिशत है।

अन्य 12 राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों में जहां नामांकन के लिए आरजीआई द्वारा प्रबंध किया जा रहा है, वहां समग्र रूप से 76 प्रतिशत संतृप्ति है जिसमें लक्षद्वीप (109 प्रतिशत), दादरा एवं नगर हवेली (103 प्रतिशत), पश्चिम बंगाल (89 प्रतिशत), उड़ीसा एवं तमिलनाडु (88 प्रतिशत), मणिपुर (65 प्रतिशत), नागालैंड एवं जम्मू एवं कश्मीर (63 प्रतिशत), अरूणाचल प्रदेश (50 प्रतिशत), और मिजोरम (46 प्रतिशत) है। दो अन्य आरजीआई राज्यों आसाम और मेघालय में कुछ स्थानीय समस्याओं की वजह से नामांकन संतृप्ति कम रही है।

यहां यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण होगा कि 18 राज्य/केंद्र शासित प्रदेश ऐसे हैं जहां वयस्क आधार नामांकन संतृप्ति 100 प्रतिशत से उपर है। किसी को आश्चर्य हो सकता है कि किसी राज्य में 100 प्रतिशत से अधिक आधार कैसे बनाए जा सकते हैं।

यह इस तथ्य के कारण है कि जनसंख्या के आंकड़े 2011 की जनगणना के आधार पर हैं जबकि आधार कार्ड के बनाने की प्रक्रिया वास्तविक आबादी पर हो रही है जिसमें 2015 तक की वृद्धि भी शामिल है। अर्थात् 2011 की जनसंख्या को आधार (विभाजक) के तौर पर लिया गया है। अन्य राज्यों की प्रवासी जनसंख्या भी इन राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की आधार वयस्क आबादी संतृप्ति संख्या में शामिल है। वास्तव में आधार एक जीवनपर्यंत के लिए विशिष्ट पहचान है जो मुफ्त में उपलब्ध है और कोई भी व्यक्ति जो भारत में रहता है, बिना किसी उम्र और लिंग की बाधा के, यूआईडीएआई की पहचान प्रक्रिया को संतुष्ट करके स्वैच्छिक रूप से देश भर में कहीं भी आधार में नामांकन करवा सकता है।

प्रथम सूचना सुरक्षा सम्मेसलन : ग्राउंड जीरो सम्मेलन

'डिजिटल इंडिया' जैसी पहल की सफलता के लिए साइबर सुरक्षा सुनिश्चित हो : राजनाथ सिंह

केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह ने 5 नवंबर को एशिया के प्रथम सूचना सुरक्षा सम्मेलन : ग्राउंड जीरो सम्मेलन 2015 का उद्घाटन किया। इस सम्मेलन का विषय डिजिटल इंडिया- 'सुरक्षित डिजिटल इंडिया' था। चार दिन तक चले इस सम्मेलन में अति आधुनिक तकनीक के विकास से पैदा हुए साइबर सुरक्षा की सुरक्षा से संबंधित कई मुद्दों और चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया गया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि इन दिनों 'साइबर' सुरक्षा हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती है और 'साइबर बाधा' की समस्या से निपटने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि यद्यपि इस इंटरनेट युग में भी भौतिक सीमाएं प्रासगिक हैं लेकिन इसका महत्व घटा है। केन्द्रीय गृहमंत्री ने कहा कि इंटरनेट के जरिये सूचना का स्वतंत्र रूप से आदान-प्रदान होता है और इस तरह की सूचना पर न तो सीमा प्रहरियों, कस्टम या अप्रावासी अधिकारियों का नियंत्रण है। ऐसे में इंटरनेट के जरिये किए जा रहे अपराधों के अपराधियों की सही जगह और उनकी सही पहचान इसलिए नहीं हो पाती क्योंकि उनका असली चेहरा छिपा होता है। परस्पर रूप से जुड़े इस विश्वे में, ये अपराधी अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन उनका एक ही उद्देश्य होता है, देश और देशवासियों का नुकसान और खतरा पहुंचाना।

केन्द्रीय गृहमंत्री ने भूमि, वायु, जल और अंतरिक्ष के साथ साइबर विश्वे को सुरक्षा का पांचवां आयाम बताया। उन्होंने कहा कि साइबर विश्व से संबंधित अपराधों और अपराधियों की खोज करना इसलिए मुश्किल होता है क्योंकि यह बहुस्तरीय, बहुस्थानिक, बहुभाषी, बहुसांस्कृनतिक और बहुविधिक हो सकते हैं। उन्होंने बताया कि 2013 की तुलना में साइबर अपराधों में 2014 में 70 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। 2012 की तुलना में इसमें 2013 में 64 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई थी।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि साइबर अपराध के साथ- साथ 'साइबर आतंकवाद' विश्व के समक्ष बड़ा खतरा है। इंटरनेट की तकनीक के जरिये दर-दराज इलाकों में रहने वाला व्यक्ति भी इस तरह की सूचना हासिल कर सकता है जिसके जरिये वह बिना किसी दल का साथ लिए बिना भी आतंकवाद की गतिविधियों में शामिल हो सकता है। इस तरह की शक्तियां युवकों को कट्टर बनाने की दिशा में साइबर दुनिया में सक्रिय हैं। उन्होंने कहा कि साइबर विशेषज्ञों को ऐसी ताकतों और 'अश्वनलाइन रैडिकलाइजेशन' के प्रति सावधान रहने की जरूरत है।

केन्द्रीय गृहमंत्री ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 'डिजिटल इंडिया', 'मेक इन इंडिया' और 'स्मार्ट सिटी' जैसे की गई पहलों की सफलता सुनिश्चित करने के लिए साइबर सुरक्षा जरूरी है। उन्होंने कहा कि यह हमारा कर्तव्य है कि किसी भी हालत में हमारी प्रमुख बुनियादी ढांचा की व्यवस्था न ढहे। यह भी जरूरी है कि काम की निरंतरता बनी रहे और समय-समय पर आपदा बहाली योजना को नियमित रूप

से जांच -पड़ताल हो और इसमें सुधार होता रहे।

सरकार द्वारा इस दिशा में की गई कुछ पहलों की चर्चा करते हुए श्री सिंह ने बताया कि साइबर सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने साइबर स्पेस के लिए कानून बनाने की नीति बनाई है। सरकार ने राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा समन्वयक डा. गुलशन राय की अध्यक्षता में एक समिति का भी गठन किया है। समिति की सिफारिशों के आधार पर सरकार ने ''भारतीय साइबर अपराध समन्वय केन्द्र'' (आई-4सी) के गठन करने के प्रयास भी शुरू कर दिए हैं। इससे साइबर आपराधों की निगरानी करने, क्षमता निर्माण करने तथा कानून लागू कराने वाली एजेंसियों को इस तरह के अपराधों को रोकने में मदद मिलेगी।

इस अवसर पर राष्ट्रीय तकनीकी शोध संगठन (एनटीआरओ) के अध्यक्ष श्री आलोक जोशी ने लोगों को संबोधित करते हुए जोर दिया कि 'डिजिटल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' की सफलता के लिए इस क्षेत्र के विशेषज्ञों को व्यक्तिगत जिम्मेदारी को समझना चाहिए और पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप मोड में डिजिटल सीमाओं को मजबूत करने में मदद देनी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि आईटी पेशेवरों के लिए संग्रहालय की तरह प्रयुक्त होने वाले नेशनल साइबर रजिस्ट्री का भी गठन होना चाहिए।

इस सम्मेलन का आयोजन देश के साइबर सुरक्षा पेशेवरों की गठित गैर लाभकारी संगठन इंडियन इन्फोसेक कंजोरटियम (आईसीसी) द्वारा आयोजित किया गया है। आईसीसी देश में साइबर सुरक्षा के संसाधनों को सुगठित और साइबर स्पेस की सुरक्षा करना चाहता है। इस सम्मेलन में साइबर सुरक्षा के पेशेवर 30 से अधिक सत्रों में विभिन्न मुद्दों ओर चुनौतियों पर विचार-विमर्श करेंगे। ■